मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

डा० परस राम अग्रवाल

वर्ष 10	सोमवार 10 अक्टूबर, 1983	संख्या 6

सत्संग परम सन्त परम दयाल फ़कीर चन्द जी
महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर 17.7.81

मनुष्यता के असूल

(फ़क़ीर अन्तिम गुरु पूर्णिमा वचन)

तुम गुरु पूर्णिमा पर आये, मुझे मत्था टेका, पैसे दिये, कपड़े दिये, ठीक है ! मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ ओ फ़क़ीरचन्द ! यह मकड़ी का जाला तूने क्यों बनाया ? सुनो दोस्तो ! मैं बचपन से उस परमात्मा को मिलने के लिए निकला था। हिन्दू था ! अपने सनातन के असूल के मुताबिक़ ईश्वर को, परमेश्वर को, ब्रह्म को, देवी-देवताओं को मानता था। चौबीस घण्टे रोने के बाद क्योंकि मुझे ख्याल मिला हुआ था कि वह अवतार लेता है, रामायण में लिखा हुआ था :—

नाना भाँति राम अवतारा।

तो यह ज़ज़वा पैदा हुआ कि उस राम को

अवतार में, इन्सानी रूप में देखूँ। जैसा मैं पहले कहता रहता हूँ मेरा एक दृश्य था जो मुझे दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल वर्मन जी महाराज के चरणों में ले गया। उन्होंने यह सन्तमत मुझको दिया। इस सन्तमत की वाणियें जब पढ़ीं तो मेरे दिल को चोट लगी। इन्होंने तमाम मज़हबों का खण्डन किया है; मुसलमान नहीं पहुँचे, ईसा मसीह नहीं पहुँचा, जैन नहीं पहुँचे, बौद्ध नहीं पहुँचे, सनातन नहीं पहुँचा राम, कृष्ण भी, इन्होंने कहा सब काल के अवतार हैं। तो उस वक़्त मेरा यक़ीन अपने मुर्शिद दाता दयाल जी पर से तो गया नहीं तो वह वाणी मुझको समझ नहीं आती थीं, तो उस वक़्त मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते में सच्चा होके चलूंगा, जो कुछ मुझको मिलेगा वह मैं संसार को बता जाऊँगा। यह, एक तो मेरा वह कर्म है जो मैं अपना कर्म भोगता हूँ। दूसरे मेरे दाता दयाल ने कहा था फ़कीर! चोला छोड़ने से पहले तालीम बदल जाना इसलिए मैं यह काम करता हूँ।

अब तुम देखो! यह सन्तमत कहाँ पहुँचाता है; वह वाणियें क्या हैं :—

इक पुरुष अजायब पाया, कोई मर्म न उसका गाया।
बिन सन्त हाथ नहीं आया, ऋषि मुनि सब
धोखा खाया ॥
क्या व्यास बसिष्ठ भुलाया, क्या शेष महेश भरमाया।
पराशर योगी नारद, श्रृंगी ऋषि धोखा खाया ॥
हम कहें कौन समझाई, प्रतीत न कोई लाया।

इस पुरुष अजायब की तलाश में मैंने अपना जीवन लगा दिया। अब आप इस वाणी को समझो, क्या कहा है स्वामी जी ने; सब का खण्डन कर दिया और फिर इस दुनिया को बनाने वाले को इन सन्तों ने ज़ालिम कहा है। सन्त जो हैं, यह इस दुनिया को पैदा करने वाले को ज़ालिम और निर्दयी कहते हैं। अब मेरे जैसा आदमी जो इस दुनिया के पैदा करने वाले को पूजता था, उसके लिए यह वाणी सुननी कि जिसने दुनिया पैदा की वह ज़ालिम है, कितना मुश्किल था। तो वाणी से तो मेरी श्रद्धा गई नहीं क्योंकि मेरा विश्वास था दाता दयाल पर और उन्होंने यह वाणी मुझको दी थी। आज मैं कहता हूँ कि इस दुनिया के पैदा करने वाला वास्तव में ज़ालिम है।

तुम अपनी बात सोचो। मेरी लड़की है। नीम-

उन्मत्त है। पैंसठ वर्ष की हो गई, मेरे घर में रहती है। अब मैं सोचता हूँ इसका ज़िम्मेवार कौन है ? क्या मैं नहीं हूँ ? मेरी ही कमज़ोरी या मेरे ही ख़्यालात या मेरे ही विचारों का नतीज़ा मेरी लड़की पर गया या न गया ! तो क्या मैं ज़ालिम नहीं हूँ ? हम लोग अपने स्वाद और अपने आनन्द के लिए बच्चे पैदा करते हैं; और बच्चों के ख़्याल से नहीं करते, आनन्द लेने के लिए करते है ; बच्चे ख़ुदरौ आ जाते हैं। वह टी. बी से मरते हैं, मुकदमे चलते हैं, बादशाह भी हो जाते हैं दुःख उठाते हैं तो क्या हम ज़ालिम नहीं हैं ? अहले दिमाग़ सोचें कि मैं ग़लत कह रहा हूँ या ठीक कह रहा हूँ। जिस ताक़त ने यह दुनिया बनाई है उसने अपनी ख़ुशी के लिए यह दुनिया रची है। आप देखो ! वृक्ष पैदा होते हैं उनको कीड़े खाते हैं, क्या वृक्ष में ज्ञान नहीं ? एक कीड़ा दूसरे को खाता हैं, तीसरा चौथे को खाता है। मैं रात को सोता हूँ, मक्खियें तंग करती हैं। मैं कहता हूँ भई ! D.D.T. लेके छिड़क दो यहाँ और वे मर जाती हैं ; यह दुनिया है क्या ! तो सन्त उन आदमियों के लिए कहते हैं, यह राधास्वामी मत या सन्तमत सिर्फ़ उन लोगों के लिए

है जिनको यह यक़ीन हो गया है कि इस दुनिया में सुख नहीं है। यहाँ सुख और दुःख दोनों हैं और जो इससे बचना चाहते हैं उनके लिए यह सन्तमत है, आम दुनिया के लिए नहीं है। मैं इसी वास्ते नाम नहीं देता। मेरे पास जितने आते हैं क्या इस दुनिया के दुःखों से बचने के लिए आते हैं ? कल एक आदमी आया वह रोता था। रात को मेरे पास दो औरतें गईं, कहती थीं बारह-बारह वर्ष हो गये बच्चे नहीं होते। मैं हँसा। यह दुनिया है क्या ? मुसीबत की जगह है ?

तो जिन शख़्सों को इस बात का एहसास होता है कि भई ! यह तो हम जन्मते रहेंगे, मरते रहेंगे, हमें क्लेश है, उनके लिए यह सन्तमत है, आम दुनिया के लिए नहीं हैं, बिलकुल ! मगर हम गुरुओं ने जो राधास्वामी मत या कबीर मत के थे, वह असली तत्त्व को छोड़ कर के हम तो दुनिया में फँस गये ! नाम लिया चौथे पद का तो काम किया हमने दुनिया का !

तो मैं यह काम क्यों करता हूँ ? चूँकि मेरे ज़िम्मे ड्यूटी थी कि तालीम को बदल जाना, तो मैंने यह समझा कि भई ! इस दुनिया से पार जाने वाले तो दुनिया में हैं कोई नहीं ! यह तो कोई कोई आदमी है

जो यह चाहता है कि मैं मुड़ के न पैदा होऊं इसलिए मैंने साधारण जनता के लिए अपने आश्रम और अपनी तालीम का नाम इन्सान बनो रखा। अब इन्सान कौन है ?

गुरु पशु त्रिया पशु, वेद पशु नर पशु संसार।
मानुष ताहे जानिये, जा में विवेक विचार॥

जिसमें सच्ची समझ और विवेक है, उसके साथ अपना जीवन गुज़ारता है, वह इन्सान है । जिस आदमी में विवेक शक्ति है, समझ-बूझ का माद्दा है, और वह समझ-बूझ के सहारे दुनिया में अपना काम करता है वह इन्सान है, यह मेरी समझ में आया। चूँकि दाता दयाल ने कहा था फ़क़ीर चन्द ! तालीम बदल जाना, मैं नहीं कहता कि जो कुछ मैंने कहा है यही final (अन्तिम) है, मैं कान को हाथ लगाता हूँ ! मेरे ज़िम्मे तो एक ड्यूटी है। अब आप लोग आये, आपने पैसा दिया, अगर आपके इस पैसे को मैं खा जाऊँ, मैं तो कुष्ठी होके मरूगा ! मेरा क्या हक़ है आप लोगों से लेने का !! मगर अगर आप देंगे नहीं तो आपका गुज़ारा नहीं ! इस वास्ते राधास्वामीमत में या सन्तमत में कहा गया है :—

शिष्य को ऐसा चाहिए, गुरु को सब कुछ देय।
गुरु को ऐसा चाहिए, शिष्य का कछु न लेय ।।

इसवास्ते मैं आप लोगों से न कोई कपड़ा लेता हूँ, न कोई चीज़ लेता हूँ। एक आदमी ज्ञानवान् है, यार-दोस्त है, वह मेरी सेवा कर जाता है मुझे उसका कोई दु:ख नहीं, मैं उनकी सेवा कर देता हूँ वह मेरी सेवा कर देते हैं।

तो आज गुरु पूर्णिमा है, सबसे पहले मैं उन सत्संगियों की इज्ज़त करता हूँ जिनकी वजह से मुझे उस अजायब पुरुष का पता लगा। मैं ख़ुद इस मन के चक्कर में फँसा हुआ था। आज कानपुर से एक अमरनाथ यहाँ आया हुआ है। कहता है तीन साल हुए उसके अन्दर एक रूप प्रकट हुआ, उसने कहा तेरा वक़्त आ गया। इसको पता नहीं था वह शक्ल किसकी है। यह उसकी तलाश में था। किसी ने कहा भई ! पंडित ख़ुशदिल के पास देहरादून चला जा वह बता देगा। यह उसके पास गया, उसने कहा उसकी शक्ल बना दे जो तेरे अन्दर प्रकट हुआ था। इसने शक्ल बना दी। उसने कहा इस शक्ल के दो आदमी हैं एक पीरेमुर्गा और एक फ़क़ीरचन्द, मैं

जानता हूँ। और वह तलाश करता हुआ मेरे पास यहाँ आया। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ क्यों फ़कीर चन्द ! तू गया था उसके अन्दर ? मैं नहीं गया। तुझ को पता था ? नहीं। इसवास्ते इस आदमी को मैंने आज अच्छे कपड़े दिये और 450/- इसके चरणों में भेंट किया। क्यों किया ? अब इन लोगों की वजह से मुझे यह यकीन हो गया कि जो कुछ सन्तमत ने कहा है वह ठीक कहा है। कोई गुरु, कोई राम, कोई कृष्ण, कोई देवी बाहर से इन्सान के अन्तर नहीं आता। इसी एक भ्रम में आकर इन्सानी नसल हज़ारों मज़हबों, पन्थों और हज़ारों फ़िरक़ों में बंट गई।

कई दफ़ा सोचता हूँ यह क्या बात है ? मैं इस बात को समझता हूँ। बात यह है कि हम और तुम जो कुछ हम सोचते है, बोलते हैं, बयान करते हैं यह सब इस ब्रह्माण्ड में रहता है। हरएक इन्सान के जिस्म के अन्तर से radiation निकलती और जैसा वह होता है वह बाहर फैलती रहती है। इसका सबूत साईन्सदान तो समझते हैं साधारण आदमी नहीं समझते। पुलिस के कुत्ते होते हैं कि नहीं होते ? जहाँ

डाका पड़ता है, चोरी होती है पुलिस वाले कोई चीज़ उसकी कुत्ते को सुँघा देते हैं। वह कुत्ता, जहाँ-जहाँ से वह चोर या डाकू गया हुआ होता है, उसकी वह बू वहाँ-वहाँ फैलती जाती है और वह उस बू को सूंघता हुआ वहाँ चला जाता है। तो इससे सिद्ध हुआ कि तुम व हम जो कुछ भी हैं, जो कुछ हमारे अन्तर से निकलता है वह इस ब्रह्माण्ड में रहता है। ऋषियों या महापुरुषों के अच्छे ख्यालात भी रहते हैं और बुरे ख्यालात भी आसमान में रहते हैं। जब किसी को किसी चीज़ की ज़बर्दस्त (प्रबल) ज़रूरत होती है, वह ज़बर्दस्त (प्रबल) चाह से माँगता है तो जब वह अपने अन्तर प्रार्थना करता है तो उसके अन्तर Vaccum हो जाता है अर्थात् उसका मन ख़ाली हो जाता है। आप कोई चीज़ को ज़बर्दस्त चाह से माँगो कि मुझे वह चीज़ मिल जाये; सच्चे दिल से प्रार्थना करो तो आपका मन ख़ाली हो जायेगा कि न हो जायेगा ? तो क़ुदरत में कोई चीज़ ख़ाली नहीं रहती। तो जिस क़िस्म की वासना, चाह करने वाले की होती है, उस क़िस्म की वासना के जो अबख़रात संसार में होते हैं वह शक्ल बना के उसके अन्तर आते हैं ; यह नहीं कि फ़क़ीरचन्द आया

या कोई और जाता है। तुम्हारे, हमारे, सबके ख़्याल जाते हैं। इसवास्ते मैंने तालीम दी है कि ऐ इन्सान! तू अगर अपने दिल के अन्दर गन्दे ख़्यालात रखेगा, दुश्मनी के विचार रखेगा, तू आप चाहे किसी का कुछ नुक़सान न कर, तेरे ख़्यालात इस ब्रह्माण्ड में रहेंगे, वह नुक़सान पहुँचायेंगे। क्या कहा मैंने! मेरी बात को समझने की कोशिश करो अगर दिमाग़ रखते हो तो।

अच्छे ख़्यालात भी और बुरे ख़्यालात भी संसार में atmosphere (वातावरण) में रहते हैं, यह साईन्स है। तो जहाँ जो आदमी जिस क़िस्म की ख़्वाहिश करता है, वह उसी क़िस्म के ख़्यालात इस ब्रह्माण्ड में होते हैं वे शक्ल बना कर उसके सामने आते हैं या किसी तरीक़े से उसको, उसकी कमी को पूरा कर देते हैं। तो ऐ इन्सान! तू चाहे किसी के मुक्का मत मार, किसी को तंग न कर मगर अगर तेरे दिल में ख़्यालात गन्दे हैं कि फ़लाँ यह है, फ़ला यह है, फ़लाँ यह है वह तुम्हारे ख़्यालात ब्रह्माण्ड में रहेंगे और दूसरे आदमी जो जो संसार में आयेंगे उन पर असर करेंगे। क्या कहा मैंने!

आप लोग सत्संग में आये हैं! मैं आप लोगों को

सत्संग देना चाहता हूँ। देखो ! मैं सत्संग कराता हूँ, मेरी radiation आपको आती है। आप जो मेरे पास आते हैं, मेरे पाँव को मत्था टेकते हैं, तुम्हारी radiation मुझे खाती है। आप जो मुझे मत्था टेकते हैं, मेरे जिस्म को हाथ लगाते हैं, मेरे पाँव को हाथ लगाते हैं तो आपकी radiation भी मुझे खाती है ! मेरे मन पर असर होता है !! और मैं उस असर को महसूस करता हूँ !! तभी तो मैं कहता हूँ कि मैंने पिछले जन्म के बड़े खोटे कर्म किये हुए हैं जो मुझे यह काम करना पड़ा। क्या कहा मैंने ! मैं तो कहता हूँ आप लोग आते हैं, मैं तो आप लोगों को अपना दुश्मन समझता हूँ। अगर बीस-तीस साल पहले मुझे यह पता होता तो मैं कभी यह काम न करता ; दाता दयाल के हुक्म को भी दरगुज़र (उलंघन) कर जाता। यह तो साईन्स है ! मुझे हैज़े या प्लेग की बीमारी हुई हुई है, जो भी मेरे सम्पर्क में आयेगा उसे लगेगी। लगेगी कि नहीं लगेगी, मुझे बताओ ? वह तो जिस्मानी है, ये मन के ख्यालात हैं और ये आत्मा के ख्यालात हैं। इसलिए अब उससे बचने का मैं क्या इलाज़ करता हूँ ? कि मैं आप किसी से प्यार नहीं

करता । अपनी ज़ाती ग़रज़ आप से नहीं रखता ! यह ख्याल नहीं आता कि फ़लाँ आये तो मेरे मन्दिर में दस रुपये दे जाय या मेरी सेवा कर जाये, यह नहीं करता । आपके निष्काम प्रेम का जबाब आपको प्रेम में देता हूँ ।

बड़े-बड़े महात्मा गिर जाते हैं कुसंगत से । कल कहीं से एक औरत आई हुई है उसने कहा मेरा भाई था । एक कोई अवधूत था, नंगा रहता था, बेफ़िक्र रहता था, मस्त रहता था, वह उसका चेला बन गया और वह चेलों के चक्कर में आगया । अब औरतें वहाँ जाने लगीं, वह उनके जाल में फँस गया । उसका भाई जो था उसनें हज़ारों रुपये देकर वहाँ मन्दिर बनवाया और यह किया और वह किया, अब वह उदास होके घर में वापिस आ गया । वह महात्मा क्यों गन्दा हुआ ? क्योंकि उस महात्मा नें तुम गृहस्थियों के साथ प्रेम किया । इस वास्ते मैं बिलकुल frank (स्पष्ट) शब्दों में कहता हूँ ; कभी-कभी मैं पुरुषोत्तम दास से भी प्रेम किया करता, जब से मुझे ज्ञान हुआ, अब किसी से प्रेम नहीं करता । अगर मैं तुम्हारा ख्याल करूँ, तुम से प्रेम करूँ तो तुम मुझको

बताओ, मैं कहाँ जाऊँगा ?

मुद्दत हो गई आप लोगों को सत्संग करते-करते ; गुरु से भी प्रेम करते हो। गुरु से प्रेम करते हो और फिर दूसरों से भी प्रेम करते हो, जो दूसरों से प्रेम है वह असर तुम्हारे में नहीं जायेगा ? यही वज़ह है कि हम लोगों की कोई तरक़्क़ी नहीं होती। इसवास्ते यह नाम-दान है किसके लिए ? हम गुरुओं ने तुमको नाम-दान तुम्हारे कल्याण के लिए नहीं दिया बल्कि मैं यह हौसले से कहूंगा कि आजकल के हम गुरुओं ने दुनिया को नाम दिया, उनको ज़हर दिया ! क्यों ? नाम उस इन्सान को मिलना चाहिए :—

विषयों से जो होय उदासा,
परमारथ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीत नहीं जाके,
खोजत फिरे साध गुरु जागे ॥

और फिर हुक्म है, ज़र, ज़न और ज़मीन को चाह को मौज के हवाले छोड़ के आओ। आप मेरी बात को समझते हो नां ! मैं आप लोगों की संगत से बाज़े वक़्त गिर जाता हूँ। मैं प्यार करता हूँ, यह मैं

नहीं कहता, मगर मैं अपनी ज़ाती ग़रज़ नहीं रखता। मुझे यह ख़्वाहिश नहीं रहती कि तुम आओ तो मन्दिर को पैसा दे जाओ या मेरा कोई काम कर जाओ। क्योंकि मेरे ज़िम्मे ड्यूटी थी कि तालीम को बदल जाना, मैं अपना कर्म भोगता हूँ।

तो मैंने कहा था कि मैं यह काम क्यों करता हूँ ? सिर्फ़ इस बात को जानने के लिए कि यह राधा-स्वामियों का या कबीरपन्थियों का ख़ुदा क्या है जो यह कहते हैं कि ये सभी नहीं पहुँचे। अब मेरी समझ में आ गया कि जो कुछ भी हमारे मन के अन्तर, हम जिसको ख़ुदा मान के पूजते हैं वह तो तुम्हारे मन का बनाया हुआ है ! एक आदमी अपने मन से उसको निराकार मान लेता है, एक साकार मान लेता है ; उसने अपने मन से उसको पूजा कि नहीं पूजा ? जितने हम मज़हब वाले हैं, जिस ख़ुदा को पूजते हैं यह हमारा अपना बनाया हुआ ख़ुदा है, असली ख़ुदा यह नहीं है। अब मैं पूछता हूँ कि क्या असली ख़ुदा है ? असली ख़ुदा है। क्या है वह ? जिसमें से मेरा मन निकला। जिस चीज़ से मेरा मन बना है वह है असली ख़ुदा। क्या कहा मैंने ! वह क्या चीज़

है ? वह है प्रकाश, वह है नूर । अगर नूर या प्रकाश हमारे जिस्म में न आये तो हमारे अन्दर मन, चित्त बुद्धि, अहंकार पैदा नहीं हो सकते । यह जितने मज़हब वाले हैं; कोई देवी को, कोई राम को, कोई कृष्ण, मुहम्मद या जैसिस क्राईस्ट को पूजता है, ये किसको पूजते हैं ? ये अपने ही मन को पूजते हैं । इस ख्याल से मैं मजबूर हूँ मानने के लिए कि जो कुछ स्वामी जी ने या सन्तों ने खण्डन किया कि ये सब काल और माया में हैं, बिलकुल ठीक है । फिर सन्त किसको पूजते हैं ? उसको पूजते हैं जिसमें से मन; बुद्धि, चित्त, अहंकार बनता है । वह है प्रकाश, नूर । और यही सनातन धर्म कहता है :—

भूर्भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यम्
तत् सवितुर्वरेण्यम् ।

वह जो सत्यम् है, वह जो नूर का प्रकाश है: वह असली खुदा है, वह असली मालिक है । तो अगर कोई शख्स सच्चे खुदा को मिलना चाहता हैं तो वह क्या करे ? अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को प्रकट करे । यह है सच्चाई जो मैंने समझी है । चूंकि सनातन भी यही कहता है, मुसलमान भी नूर को मानते हैं इस

लिए जितना तफ़ुरका (भेद-भाव) है यह उन आदमियों का है जिनको न इस्लाम की असलियत का पता है न सनातन की असलियत का पता हैं ; वह तो सारी दुनिया भन के चक्कर में फँसी हुई है ।

मेरे ख़्याल में आज पूर्णिमा है, आप लोगों ने मेरी सेवा की, मैं क्या सेवा करूँ ? वह आदमी जो आया हुआ है जिसके अन्दर मेरा रूप तीन साल पहले प्रकट हुआ या I.C.Sharma मैं अपनी तरफ़ से इनको सच्ची बात बताना चाहता हूँ।

क्या मैं अपनी आत्मा से पूछने के लिए तैयार नहीं हूँ कि जब मै नहीं गया, तो अगर तू यह सच्ची बात उसको नहीं बताता, उसको अपने जाल में फँसाता है, उससे पैसे लेता हैं, उससे मत्था टिकाता है तो क्या मैं मुजरिम नहीं हूँ ? यह जितने महात्मा गुज़रे हैं, मैं हौसले से कहता हूँ कि इन्होंने अपनी ज़िन्दगियों के साथ खेल खेला है । तुम लोगों को अज्ञान में रखकर के ज़रूर दिलासा व हौसला दे गये मगर अपनी जान को बर्बाद कर गये ! कोई महात्मा, कोई गुरु किसी के अन्दर नहीं जाता, अगर कोई चीज़ जाती है तो मैंने वह जो कहा कि radiation में waves होती हैं,

वह मौजूद रहती हैं वे जाती हैं। आजकल की science ने जर्मनी के सैनिट हाल में जो सौ साल पहले वज़ीरों ने लेक्चर दिये हुए थे उनको उन्होंने Record किया है। तो जो कुछ भी हम सोचते हैं, विचारते हैं, बोलते हैं यह सब इस ब्रह्माण्ड में रहता है। तो जहाँ किसी को जिस चीज़ की ज़रूरत होती है वह ख्यालात जो ब्रह्माण्ड में हैं वे उसके अन्दर जाते हैं। यह मेरा तज़ूर्बा है।

कई आदमी कहते हैं कि इंग्लैण्ड में रूहों को बुलाते हैं। जो रूह आयेगी, वह जो आगे होने वाला है उसकी बाबत नहीं बता सकती। वह चूंकि यकसू हो जाते हैं, वह मरने वाले के जो ख्यालात हैं वे ब्रह्माण्ड में रहते हैं, वे ख्यालात आकर के बोलते हैं, मगर वह उसका जो आगे का हाल है वह नहीं बता सकते, यह है सबूत। अफ़सोस मुझे शब्द नहीं मिल रहे, मैं जो कुछ आपको कहना चाहता हूँ, उसके लिए मैं कोशिश कर रहा हूँ कि मुझे अच्छे लफ़्ज़ मिलें। आप समझ गये मेरी बात को कि नहीं! मरा हुआ कोई नहीं रहता यहाँ, न राम, न दाता दयाल, न गुरु नानक साहिब; उनके ख्यालात मौजूद हैं, उनके

बिचार और भाव मौजूद हैं। आप समझ गये मेरी बात को ? तो जब इन्सान, कोई अपने अन्तर कोशिश करता है तो वह जो ब्रह्माण्ड के अन्दर हैं वह उसके अन्दर आ जाते हैं। गन्दा आदमी होता है, उसके अन्दर जो गन्दे ख़्यालात फैलते हैं वह आ जाते हैं। जिस तरह देखो नां ! यहाँ हर जगह Radio waves चल रही हैं। हमको तो नज़र नहीं आतीं ! मगर अभी Radio लगा दो, जालन्धर सुन लो, देहली सुन लो ; हैं तो, मगर हमको नज़र नहीं आतीं ; ऐसे ही हमारे ख़्याल, हमारे विचार इस ब्रह्माण्ड के अन्दर मौजूद रहते हैं। इन्सान जो बुरा सोचता है, वह कहता है मैं किसी का बुरा नहीं करता, अरे ! मेरी समझ में आया है, ऐ इन्सान ! तू जो हर वक़्त गन्दा ख़्याल और बुरा ख़्याल रखता है, तू दुनिया के लिए ज़हर फैला रहा है ; तेरे ख़्यालात atmosphere (वातावरण) में रहेंगे और दूसरे पर हमला करेंगे। क्या कहा मैंने ! अफ़सोस मुझे लेक्चर देना नहीं आता मगर मैं अपने भाव को बयान करने की कोशिश करता हूँ। इसलिए वेद मार्ग है "शिवसंकल्पमस्तु" ; हम घर में बैठ के दूसरे की बुराई सोचते

रहते हैं, आप सोचते हैं इसका कोई असर नहीं ? वह जो तुम्हारा सोच है, विचार है, तुम्हारी waves हैं, वह तुम्हारे अन्दर से निकलती हैं, उस atmosphere में रहती हैं, उनका असर दूसरों पर पड़ता है।

यह तो अब साईन्स ने साबित किया नां ! हमारे ऋषि भी तो यही तालीम देते थे । पिछले ज़माने की औरतें होती थीं; वह सिवाय अपने पति के बिस्तरे के दूसरे किसी के बिस्तरे पर नहीं सोती थीं ; औरतों को मालूम होगा ! क्यों ? कि जो जिस अवस्था में रहता है, जो जैसा है, उसके असरात उसके कपड़े में जाते हैं जो आदमी उस कपड़े को इस्तेमाल करेगा उसके जज़्बात उसके अन्दर जायेंगे। सोचो मेरी बात को ! हमारे हाँ पगवट भरा (भाई) बनते हैं । एक पगड़ी अपनी उसको दे देता है, वह पगड़ी उसको देता है ताकि उसके ख़्यालात उसमें चले जायें। यह है साईन्स।

तो आप लोग सत्संग में आये, मेरे बुढ़ापे की उमर पर रहम करो ; बात को समझो और अपना जन्म बनाओ ! अरे ! पैसे देने से, आरतियाँ करने से या यह करने से अगर तुम यह चाहो कि तुम्हारा कल्याण

हो जाये यह नहीं होगा ! यह नहीं होगा !! यह नहीं होगा !!! यह तो दुनिया का व्यवहार है, लेना, देना पड़ता है । न कोई देता है, न कोई लेता है; जिसने पिछले जन्म का किसी से लेना है उसने ले लेना है, जिसने देना है उसने देना है ।

तो, मैं यह काम क्यों करता हूँ ? मैं सोचता हूँ, भई फ़क़ीर चन्द ! तूने क्या मकड़ी का जाला बना लिया !! मैंने मकड़ी का जाला नहीं बनाया, नाही, मैं आया ही इस संसार में फ़कीर के चोले में इसी वास्ते हूँ कि सन्तमत या हक़ीक़त या असलियत को बिलकुल खोलकर के बता जाऊँ ताकि इन्सानी नसल जो बचना चाहती है वह इस असूल को समझ कर बचे, नहीं बचना चाहती है तो मैं क्या करूँ ! कोई क्या करे !! यह है मेरे काम करने का असली मक़सद और असली खेल ।

मैंने आपको बता दिया, मैं आपको सच कह रहा हूँ कि इस वक़्त मैं यह समझता हूँ कि यह सत्संगी मेरे सच्चे दुश्मन हैं । आपकी radiation मुझ पर असर करती है । 2×2=4 के केवल एक सूरत मैंने इस बचाव की देखी कि मैं अपनी ज़ाती ग़रज़ के लिए

आपसे प्रेम नहीं करता। आपसे क्या, लड़के से प्रेम नहीं अब करता; बहू से भी (बीबी तो मर गई) प्रेम नहीं करता, पोते-पोतियों को भी मैं छोड़ गया इस वहम में आकर कि Law of radiation काम करता है। मगर इस radiation से कोई बच नहीं सकता, इसवास्ते सन्त कहते हैं भई ऐ इन्सान !! यह दुनिया जिसमें तू रहता है यह ऐसी ही है। इससे अगर बचना चाहता है तो तू मन से ऊपर चला जा, बस ! लाख इन्सान कोशिश करे इस radiation के असूल से तुम बच के जाओगे कहाँ ! दुनिया में रहते हैं !! तो सन्तों का मार्ग जो है वह सिर्फ़ इस ख़याल से है कि जीव जन्म-मरण से बच जायें। मगर जन्म-मरण से बचने का एक तरीक़ा, मैं ख़ुद सोचता हूँ क्या करूँ फ़क़ीर चन्द, मैं ? मेरे तजुर्बे में आया है साईन्स ने साबित किया, मैं कहा करता हूँ कि डाक्टरों ने मरने वाले को Sensitive Scale पर रखा। जब उसकी रूह निकली, मरने वाले का जिस्म कोई 5 ग्राम, कोई 10 ग्राम, कोई 15 ग्राम घट गया। वह रूह क्यों भारी थी ? क्योंकि उसको स्थूल पदार्थ में मोह था। तो जो गुरु से मोह रखता है उसका बाप भी जन्म-मरण से नहीं निकल सकता क्योंकि फ़क़ीर चन्द को वह जिस्म

समझता है ; उसका प्रेम जिस्म के साथ है ! आप समझ गये क्या मैं कह रहा हूँ ? आजकल यह गुरुइज्म पाखण्डइज़्म है ; "नाम ले जाओ जी अन्त समय गुरु तुमको सत्तलोक ले जायेगा।" अरे ! अन्त समय जो गुरु देहधारी तुम्हारे सामने आयेगा वह तुम्हें सत्तलोक नहीं ले जा सकता । हाँ ! अच्छी योनि मिलेगी, अच्छे ख़्याल मिलेंगे, अच्छे विचार मिलेंगे । चूँकि मैंने देखा कि इस वक़्त गुरुमत में बहुत सा धोखा है, फ़रेब है, मेरे ज़िम्मे ड्यूटी थी, मैंने सच्चाई की घोषणा कर दी ।

अब जब आप लोगों के तजुर्बों से मुझे मन के रूप का यक़ीन हो गया तो मैं क्या करता हूँ ? मन को छोड़ जाता हूँ। वह अजायब पुरुष कहाँ रहता है ? वह मन के परे रहता है । चूँकि इस बात का तजुर्बा मुझको आप सत्संगियों से हुआ इसवास्ते ऐ गुरु पूर्णिमा के दिन ! ऐ मुझे गुरु मानने वाले प्यारो !! मेरे शरीर को कुष्ठ पड़े अगर मैं झूठ बोलूँ, मैं झूठ नहीं बोलता ! मैं आप लोगों के चरण कमलों में अपना सिर निवा के आपको गुरु रूप समझ के नमस्कार करता हूँ। क्यों ? कि आप लोगों के तजुर्बों की वजह से मुझे मन माया के

रूप का निश्चय और गुरु रूप का ज्ञान पक्का हुआ, जिस चीज़ के लिए मैं सारी ज़िन्दगी तड़प-तड़प के मर गया ! हज़ारों रुपये मैंने आरती पर खर्चे। हुक्म था गुरु की सेवा करो, आरतियें करो, मैं भी करता था, बारह वर्ष जो कमाया सब वहाँ भेजा, मगर वह मुअम्मा (रहस्य) हल नहीं होता था। दाता दयाल ने मुझे यह काम दिया था, कहा था फ़क़ीर चन्द ! तुमको सच्चा सत्तगुरु सतसंगियों के रूप में मिलेगा और आप लोगों के तजुर्बों ने मेरी आँख खोल दी ; आप की बदौलत बात समझ में आगई और मुझे इस मन पर क़ाबू करने का मौक़ा मिल गया। मैं इस काम से सुखी नहीं हूँ, आपको बिलकुल सच्ची बात कहता हूँ, मगर :—

कर्म प्रधान विश्व कर राखा।
जो जस कीन तस फल चाखा ॥

चूँकि मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा, दाता दयाल को मैंने अपने ही विश्वास से अपना मालिक माना ! अब मेरे सिर पर उनके हुक्म की जिम्मेवारी आ गई। क्योंकि उन्होंने कहा था फ़क़ीर ! चोला छोड़ने से पहले तालीम बदल जाना

इसलिए मैं यह काम करने के लिए मजबूर हूँ। अब आप लोग आये हैं, मैं जानता हूँ जहाँ मैं बोलता हूँ वहाँ आप नहीं जा सकते। यह वहाँ जाना भी अपने वश में नहीं है; जन्म-जन्मानतरों के क़िस्से होते हैं, कोई भाग्य वाला होता है। बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे बडे भाग्य हों तो सत्संग मिलता है, बडे भाग्य हों तो सत्संग की बात समझ में आती है, बड़ा भाग्य हो तो वह अमल होता है। इसलिए आप गृहस्थियों के लिए मैंने इन्सान बनो की आवाज़ उठाई है; जो काम करो विवेक से करो :—

गुरु पशु वेद पशु नर पशु त्रिया पशु संसार।
मानुष ताहे जानिये, जा में यिवेक विचार ॥

सोच समझ के काम करो। क्या कहना चाहता हूँ ? सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा करो। आजकल हम लोग ख़ुदरौ सन्तान पैदा करते हैं और फिर आप यह उम्मीद करें कि वह आपके बच्चे जो ख़ुदरौ हुए हूए हैं ये ज़ब्त (अनुशासन) में रहेंगे, आपकी सेवा करेंगे, आपकी ख़िदमत करेंगे, कैसे हो सकता है! परसों एक आदमी मेरे पास रोता हुआ आया; लड़के को बड़ा पाला, पढ़ाया, शादी कर

दी, अब वह घर में लड़ाई करता था, अब अलहदा हो गया। मैं पूछता हूँ उस आदमी को क्या तुमने बच्चे को बच्चे के लिए पैदा किया था ? अपने स्वाद के लिए औरत के पास हम जाते हैं, बच्चे पेट में आ जाते हैं, फिर यह उम्मीद करते हैं वह बच्चे हमारी ताबेदारी करेंगे या हमारे लिए यह करेंगे, यह फ़िज़ूल बात है। मैंने उस आदमी को कहा लानत है तुझ पर जो इतना माया के दबाव में आया हुआ है ! एक विवेक तो गृहस्थियों को मैं यह देना चाहता हूँ।

दूसरा विवेक यह है कि तुम्हारे ख़्याल में बड़ी भारी ताक़त है इसका सबूत मैं तुमको देता हूँ-मैं गीता नहीं तुमको पढ़ाता, रामायण नहीं पढ़ाता, अंजील नहीं पढ़ाता ; असूल की बात बताता हूँ। रात को तुम सो जाते हो तुमको ग़ुस्सा आता है, किसी को मुक्का मारते हो तुम्हारा हाथ हिल जाता है। रात का स्वप्न में डर जाते हो, तुम्हारी ज़बान बड़बड़ाती है। रात को स्वप्न में ख़्याली औरत बना लेते हो तुम्हारा वीर्य निकल जाता है। स्वप्न का ख़्याल वश में नहीं है। जब स्वप्न का ख़्याल जो तुम्हारे वश में नहीं वह तुम्हारे जिस्म पर असर करता है तो जागते

हुए हमें जो किसी से नफ़रत है, किसी से द्वेष है, किसी से झगड़ा है, किसी के विरुद्ध हम plan (योजना) करते रहते हैं, किसी के विरुद्ध कुछ, किसी के विरुद्ध कुछ, उसका असर तुम्हारे पर क्यों न होगा ? यह logical है ; इसमें न कोई हिन्दू का सवाल है, न मुसलमान का सवाल हैं, न ईसाई का सवाल है, यह इन्सानियत का सवाल है। इसवास्ते इन्सान कौन है ? जो विवेक से रहे :—

गुरु पशु, त्रिया पशु नर पशु संसार।
मानुष ताहे जानिये जा में विवेक विचार ॥

तो विवेक विचार जो मैंने समझा, अपने कर्मभोग वश यह कहता हूँ। मैंने आपको सबूत दे दिया, Logically, बिलकुल असूल के मुताबिक़ कि तुम्हारे ख़्याल में बड़ी ताक़त है, तो घरों में रहते हो, एक दूसरे का बुरा मत चाहो। यहाँ आजकल क्या है ? लड़का बाप के विरुद्ध है, पत्नी पति के विरुद्ध है, भाई भाई के विरुद्ध है। मुल्क में क्या हो रहा है ? एक पार्टी दूसरे के विरुद्ध है फिर तुम यह उम्मीद करते हो कि ऐसी हालत में तुम्हारा मुल्क सुखी रहेगा, आप भूल जाओ !:—

इब्तदाए इश्क़ है रोता है क्या ।
आगे आगे देखिये होता है क्या ।।

ये जो हमारे ख़्यालात हैं इसका नतीजा, मैं नहीं कहता क्या हो मगर इनका असर हमारे जिस्म पर ज़रूर पड़ेगा ! पड़ेगा !! पड़ेगा, कोई ताक़त रोक नहीं सकती !!! जो मरज़ी चाहे पार्टी आ जाये वह हमको मुसीबत से नहीं बचा सकती, चूंकि यह क़ुदरत का खेल है ; इस वक़्त नफ़रत का खेल है । राजनीतिक पार्टियाँ क्या कुछ नफ़रत नहीं करतीं, हम घरों में क्या कुछ नहीं करते, रोज़ झगड़े होते हैं और cold war रखते हैं तो फिर यह उम्मीद करो कि तुम सुखी रहोगे, यह ग़लत है । मेरे ज़िम्मे ड्यूटी थी मैंने कह दिया ।

तीसरी बात मैं नौजवान बच्चों के लिये कहना चाहता हूँ । मेरे पास जितने नौजवान बच्चे या लड़के आते हैं, maturity से पहले बचपन में अपने ब्रह्मचर्य को खो देते हैं ; कोई हथरसी करता है, लड़कियाँ चपटी खेलती हैं, गन्दे ख़्यालात रखती हैं तो इनके अन्दर, ज़िस्म के अन्दर दिमाग़ की ख़राबी होना, बीमारी होनी, यह होना, वह होना यह अमर

आज़मी है। इसलिए मैंने तालीम को बदला : घर में शान्ति रखो, अपने मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य को क़ायम रखो (कम से कम जब तक तुम maturity को हासिल नहीं करते) और अच्छी औलाद पैदा करो।

चौथी बात यह है कि इन्सान का मन कमज़ोर है। इसकी कुव्वत-ए-इरादी को बढ़ाने के लिए सुमिरन, ध्यान किया करो। मैं नहीं कहता तुम राधास्वामी मत के हिसाब से सुमिरन करो, मैं नहीं कहता तुम सिक्खमत के हिसाब से सुमिरन करो, तुम मन को यहाँ (भूमध्य में) इकट्ठा करने की कोशिश किया करो। राम-राम के जाप से करो, अल्लाहू के जाप से करो, वाहें गुरु के जाप से करो या एक, दो तीन, चार, पाँच, छः, दस के जाप से करो, मतलब तो तुम्हारे मन की एकाग्रता की ज़रूरत है। जिसका मन एकाग्र है उसकी will power अच्छी हो जाती है, उसके काम हो जाते हैं। चूंकि मेरे ज़िम्मे ड्यूटी थी कि तालीम बदल जाना, मैं किसी मज़हब का अनुयायी नहीं ; न मैं हिन्दू हूँ, न मुसलमान हूँ, न मैं राधास्वामिया हूँ, न मैं सिक्ख हूँ , न मैं

ईसाई हूँ, मैं मनुष्य हूँ ; आपकी तरह एक आदमी हूँ , जैसे आप हैं वैसे मैं हूँ । बन्दिशें टूट गईं, दाता ने बड़ा रहम किया, सब ख़त्म हो गईं ।

तो, इन्सानियत के असूल मैंने आपको बता दिये। चूंकि मन महा चंचल है; ठहरता नहीं, इसको क़ाबू करना आसान नहीं, तो इसका इलाज यह है कि सत्संग अच्छा रहे। दूसरे; सुमिरन किया करो। मैं नहीं कहता तुम पाँच नाम का सुमिरन करो या राधास्वामी नाम को, मुझसे अगर पूछो तो मैं तो राधास्वामी नाम बताऊंगा क्योंकि मैं गुरु की प्रणाली को क़ायम रखना चाहता हूँ मगर मैंने तो चेले किसी को नहीं बनाया ; आपकी मर्ज़ी ! ज़रूर आधा घण्टा, बीस मिनट, पच्चीस मिनट ध्यान किया करो हर रोज़ सुबह शाम, आपकी ज़िन्दगी बदल जायेगी।

चौथे हमारी हक़ ओ हलाल की कमाई होनी चाहिए। हम हेराफेरी करते हैं, चारसौबीस करते हैं, यह करते हैं, वह करते हैं, वह करते हैं तो जैसी हमारी कमाई है वैसा हम पर असर पड़ता है। तो यह पाँच चार बातें हैं जो मैंने आपको कह दीं। मुझ से ज़्यादा बोला नहीं जाता ; एक घण्टा होगया, यही काफ़ी है।

आप लोग आये हैं, दाता ! मैं कामी हां ! (गला भर आया, स्वर दर्द भरा होगया) आपकी शरण में गया था ! पतित को आप ने किनारे लगाया, ऐन लंघाया !! खेल खिलाया !!! मेरे पास तो कुछ है नहीं ! जो संस्कार आप ने दिया, मैं कर चला ; अच्छा कर चला, बुरा कर चला, मुझे पता नहीं ! ज़िन्दगी इख़्तताम (अन्तिम चरण) पर है ! ऐ मालिक ! अपने चरण कमलों में बासा दे दे !! संसार भूल जाऊँ, दुनिया भूल जाऊँ । आपका एहसान ! आपने दाता के रूप में जो हुक्म दिया, बजा लाया ! क्षमा चाहता हूँ !!

सबको राधास्वामी ।

सत्संग परम सन्त परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

तिथि 13-4-81

सुनो ! मैंने यह स्यापा पिटट्या सिर्फ़ यह बताने के लिए कि तुमको दुनिया की तकलीफ़ात आती हैं, अपना तजुर्बा बताता हूँ, एक इष्ट बना लो, उस इष्ट को पूरा मानो । मैं नहीं कहता मेरा इष्ट बनाओ, जहाँ भी तुम्हारा विश्वास हो, उस रूप का, तुम जो तुम्हारी इच्छा है वह रखकर के, मस्तिष्क में ध्यान किया करो । वह ख़्वाहिश तुम्हारी अगर अपनी ज़ात के लिए है वह पूरी हो जायेगी । क्यों ? शास्त्र में लिखा है, कलियुग में जो ख़्वाहिशात आँखें खोल के करते हैं, उनका इतना असर नहीं होता । जो ख़्यालात हम आँखें बन्द करके, मस्तिष्क में ठहर के जो कुछ वहाँ विचार करते हैं उसका असर होता है । यह मैं क्यों कहता हूँ ? मैं बाहर जाता हूँ, लोग मेरे

पास आते हैं, कोई तकलीफ़ होती है, मैं कहता हूँ ध्यान किया करो भई। जब दोबारा मैं वहाँ जाता हूँ, एक कहता है बाबाजी मेरा काम हो गया। तेरा ध्यान बन गया ? जी हाँ बन गया। कोई कहता है जी मेरा काम नहीं बना ! तेरा ध्यान नहीं बना। भई ! ध्यान तेरा नहीं बना तो मैं क्या करूं ! आप लोग आये हैं मैं आपको आसान से आसान गुर बता देता हूँ। मैं नहीं कहता तुम राधास्वामिये हो जाओ, मैं नहीं कहता तुम किसी मज़हब में शामिल हो जाओ। नाहिं ! सिर्फ़ एक उस मालिक का इष्ट मान लो। मालिक का तो कोई रूप नहीं, आख़िर शुरू शुरू में आपको कोई न कोई रूप मानना पड़ेगा, गुरु का मान लो ; एक का मानो ! हिन्दुओं में यह मुसीबत है कि आज राम को पूजते हैं, कल कृष्ण को, परसों देवी को ; धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का। जब तुम एक रूप बना लोगे, तुम्हारा काम न पूरा हो तो उसकी ज़िम्मेवारी मैं लेता हूँ। इससे तुम्हारी जो will power है वह बढ़ जाती है, तुम्हारी अपनी will power के बढ़ने से तुम्हारा काम होता है। देखो मैं क्या कह रहा हूँ ! लोग मेरा

ध्यान करते हैं, वे कहते हैं "बाबा दे गया।" बाबा कौन देने वाला ! तुम्हारा अपना जो concentration है, जो अपना तुम्हारा विश्वास है, your own will power, that helps you, यह मेरी समझ में आया है। आप समझते हैं विश्वामित्र ?

इसीलिए, अब देखिये ! यह विश्वामित्र है, इन्होंने कहीं मेरी किताब पढ़ी। मैं कैनेडा गया वहाँ पर मुझे मिले। इनको बहुत ही शान्ति मिली। २०-२५ हज़ार रुपया तो इन्होंने मुख़तलिफ़ वक़्तों पर यहाँ भेजा, अब कहते हैं डेढ़ लाख रुपया हम आपको देंगे। मैंने कहा भई ! मैं नहीं लेता। क्यों ? आज आपका कोई काम नहीं बना तो फिर आप कहेंगे देखो जी ! मैंने डेढ़ लाख रुपया बाबे को दिया था मेरा काम नहीं बना ! यह ज़िद्द करते थे मैंने कहा अच्छा ! तुम बच्चों के नाम जमा करा दो, ब्याज मन्दिर ले लेगा, रुपया तुम्हारा जिस वक़्त चाहो ले लो। आप मेरे भाव को समझते हैं कि नहीं ! अब अगर मैं लालच करता तो डेढ़ लाख रुपया हज़म कर जाता।

क्रमश :

फ़कीर "ग़ज़ल"

आज तक जो छुपा रहा, इन्कशाफ़े-निहानी का नाम था,
फ़कीर किसी आदमी का नहीं, परम तत्त्व अनामी का नाम था।
सदियों तक शमा-ए-हक़ जो पसे पर्दा झिलमिलाती रही,
फ़कीर किसी पर्दे का नहीं, साफ़ ब्यानी का नाम था।
जो भी हाज़िर बज़्मे हुज़ूर हुआ, रूह से मस्तो मसरूर हुआ,
घटावार जो बरसती रही, फ़कीर मस्त निगाही का नाम था।
मुकम्मिल कर सका न कोई वली मुरशिदे-आज़म जिसे,
जो फ़कीर ने ख़ुद पूरी की, फ़कीर उस कहानी का नाम था।
किस सादागोई से, इसरारे-हक़ खोल गता वह,
सीरते-रब्बानो का नाम था, फ़कीर सूरते-इन्सानी का नाम था।
अर्शी-कलमा सुना कर, जिसने हमें बेदार किया,
फ़कीर सुभानल्ला ! उस अलल नूरानी का नाम था।
पिघल-पिघल जाता था, दुखियारों के सुन कर दुखड़े,
प्यारा फ़कीर दर असल, ख़ुदा की मेहरबानी का नाम था।

कौन रोया, जितना वह रोया, कौन नाचा जितना वह नाचा,
ज़ात में आखिर गुम हुआ, फ़क़ीर बेनज़ीर बानी का नाम था।
कोई किताब नहीं उगली, आप अपना ही अनुभव बताया,
फ़कीर किसी आम नहीं, फकीरे-लासानी का नाम था।
रोशनज़मीरी की झील में, प्यार का हंस तैरता रहे,
'मनुष्य बनो' पुकारा जिसने, फ़क़ीर हुक्मे-यज़दानी का नाम था।
जीने का शऊर सिखा गया, रुह को सरूर पिला गया,
नग़मा-ए-बेदारी था वह, फ़कीर पैग़ामे-रुहानी का नाम था।
इक हालते-बेहालत कहो, या चिराग़ गुल पगड़ी गायब कहो,
लब खुले और बन्द हुए, फ़कीर राज़े-ज़िन्दगानी का नाम था।
मुरशिद का हुक्म माना, तालीम का बदला ताना बाना,
फ़कीर हल्क़ा-ए-रूहानियत में, एक इन्क़लाबी का नाम था।
'विहान' जैसे गुनाहगार, पनाह में जिसने क़बूल किए,
सच कहता हूँ, फ़कीर, रज़्ज़ाकी-ए-रहमानी का नाम था।

धनीराम विहान,
एम. ए., बी. एड.

मासिक सन्देश

मेरे प्यारे सत्संगियो !

राधास्वामी, परम दयाल जो सहाई !

अगस्त का महीना भी गुज़र गया। जब मैं सितम्बर महीने की सद्भावना आपको लिखने बैठा, तो ऐसा मालूम या महसूस हुआ कि आप सब मेरे सामने बैठे हैं और मैं आप से साक्षात् बातें कर रहा हूँ। मेरे प्यारे सत्संगियो ! आप कहीं भी हों, शहर में, गाँव में, भारत में या विदेश में, मैं जो कुछ भी आपको लिखता हूँ उसमें मेरे अन्तर से निकली हुई सच्ची सद्भावना होती है। मैं गुरु की कृपा के कारण आप सब को सच्चे दिल से प्यार करता हूँ और सदा आपकी हर प्रकार से भलाई चाहता हूँ। मेरे गुरुदेव ने मुझे आप लोगों की सेवा करने का मौक़ा देकर मेरे ऊपर सचमुच ही बहुत बड़ा उपकार किया है। मैं अपने विचार तथा अपनी सद्भावना प्रत्येक सत्संगी तक पहुँचाना चाहता हूँ।

मैं लिखते-2 सोच रहा हूँ कि मेरा और आपका सम्पर्क यकतरफ़ा है । मैं तो मासिक सन्देश के द्वारा आप से बात कर सकता हूँ परन्तु आप मुझ से बात नहीं कर सकते । मुझे मालूम नहीं कि आप पर मेरी बातों का प्रभाव पड़ता है कि नहीं । हाँ बहुत से पुराने सत्संगी तथा इस पत्रिका के नये पढ़ने वाले कई बार लिखते हैं कि उन्हें मानव मन्दिर पढ़ने में सच्चा आनन्द तथा शान्ति मिलती है । मेरी अपनी ही आत्मा के अंश, मेरे प्यारो ! मेरी यह दिली इच्छा है कि आप मासिक सन्देश पढ़ने के बाद उस पर अमल करें, उसे अपने जीवन में उतारें इस से आपकी सांसारिक इच्छाएँ तो पूरी होंगी ही किन्तु इसके साथ-२ आप रूहानियत में भी आगे बढ़ेंगे । यदि आप सच्चे हैं, लोगों को ठगते नहीं, अपने-२ इष्ट या गुरु में सच्ची श्रद्धा रखते हैं; तो कोई कारण नहीं कि आपकी दुनियावी इच्छाएँ पूरी न हों । यदि आपकी इच्छाएँ पूरी नहीं होतीं, तो कमी आपके गुरु में नहीं, कमी आपके यकीन तथा श्रद्धा में है । मेरी तो ऐसी कोई इच्छा नहीं जो मेरे गुरु ने पूरी नहीं की हो ।

इस बार आपने महसूस किया होगा कि मानव

मन्दिर की छपाई में काफ़ी सुधार हुआ है। सैक्रेटरी साहब श्री नारायण दास जी डोगरा ने इस बार दिन रात एक करके बड़ी मेहनत से इस पत्रिका को सुधारने की कोशिश की है। मैं आप से वायदा करता हूँ कि इसको सुधारने के लिए हर सम्भव क़दम उठाया जायेगा।

परम दयाल जी महाराज 'मानव मन्दिर' में कई बार लिखा करते थे "इस पत्रिका का कोई पैसा नहीं लिया जाता, किन्तु जो महानुभाव यह समझते हैं कि यह पत्रिका सच्चाई को ब्यान करती है और यह सच्चाई मानव मात्र के लिए उपयोगी है, तो अपनी-२ सामर्थ्य के मुताबिक़ इस पत्रिका को आगे बढ़ाने के लिए वे अपना चन्दा फ़कीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर के नाम भेज सकते हैं।" आज मैं मानव दयाल अपने परम गुरु, परम पिता के उन्हीं शब्दों को फिर दोहरा रहा हूँ।

चन्दा या दान भेजने के सम्बन्ध में मैं आपको एक और बात भी कहना चाहता हूँ। देखा गया है कि डाकख़ाने की गड़बड़ी के कारण, कई बार मनी-आर्डर भेजने वाले सत्संगियों को उनके मनीआर्डर की वापिसी रसीदें नहीं पहुँच पातीं। इसलिए मेरा

आपको यह सुझाव है कि यदि आपका किसी बैंक में खाता है तो आप चन्दा क्रौस चैक के द्वारा भेज दिया करें। यदि खाता नहीं है तो आप किसी भी बैंक से ड्राफ़्ट बनवा कर भेज सकते हैं। ड्राफ़्ट भेजने के लिए आपका अपना खाता होने की ज़रूरत नहीं और ड्राफ़्ट बनवाने में मनीआर्डर से पैसे भी कम लगते हैं। यह मेरा सुझाव है ।

पिछले महीने के सन्देश को जारी रखते हुए, इस बार मैं आपको सन्त मत यानि कि भक्ति-मार्ग के उन तीन दर्जों की व्याख्या करूंगा, जिन्हें नाम, मुक्तिपद और निजधाम कहा जाता है। इसी मार्ग की पहली सीढ़ी को भक्ति कहा गया है, जिसकी व्याख्या पिछले महीने के सन्देश में कर दी गई थी। असल में देखा जाय तो ऊपर दिए गए तीनों दर्जे भी भक्ति के ही अंश हैं। जब एक शिष्य अपने गुरु को परम तत्त्व मान कर उसकी बाहरी और आन्तरिक भक्ति करता है तो एक सच्चा गुरु, कुछ परीक्षाएं लेने के बाद शिष्य के स्वभाव के अनुसार ही उसे नाम दान देता है ; वह उसे सिमरण, ध्यान और भजन का तरीका बताता है और ऐसा मन्त्र बताता है, जिसका अजपा जाप करने से शिष्य का ध्यान बन जाता है और मन टिक जाता है। उसके

बाद ही अधिकारी शिष्य अन्दरूनी मन्ज़िलें तय करता हुआ प्रकाश और शब्द में लीन हो जाता है। लेकिन इस अवस्था या हालत में पहुँचने से पहले, नाम का लगातार सिमरण करना बहुत जरूरी है। आमतौर पर एक या दो घण्टे सिमरण करने को बहुत समय माना जाता है, परन्तु सत्य बात तो यह है कि असली भक्त तो वह है, जो उठते-बैठते, चलते-फिरते, सोते-जागते, हर समय मालिक के उसी नाम का सिमरण करता रहे जो उसे गुरु ने दिया है ।

ऐसा करने से एक तो साधक की वृत्ति टिक जाती है और मन एकाग्र हो जाता है। दूसरा यह कि जब साधक प्रकाश से गुज़रता हुआ, शब्द में लीन हो जाता है, उस समाधि की हालत में वह सुख-दु:ख, लाभ-हानि, ईर्ष्या-द्वेष से कम से कम कुछ समय के लिए तो ऊपर उठ जाता है। लगातार अभ्यास के द्वारा साधक जागृत अवस्था में भी धीरे-२ सुख-दु:ख, लाभ-हानि से ऊपर उठ जाता है और वह किसी से ईर्ष्या या द्वेष नहीं करता और न ही वह अपने मान या निन्दा की परवाह करता है। इसी स्थिति को ब्राह्मी स्थिति या जीवन्मुक्ति की हालत कहा गया है। यह

भक्ति मार्ग की तीसरी हालत है, जो कि दूसरी हालत, नाम जाप का फल है। इसी जीवन्मुक्ति की हालत को चश्मे वाहदत भी कहा गया है। इस हालत में मस्ती और आनन्द का ऐसा अनुभव होता है कि साधक को किसी भी बात की चिन्ता सताती ही नहीं। इस हालत में रहने वाला जीवन्मुक्त भक्त संसार के सभी जीवों और सभी चीज़ों को मालिक या परम तत्त्व और परम तत्त्व को सभी जीवों तथा चीज़ों में महसूस करता है। इसी उन्मुन अवस्था को बताते हुए स्वामी रामतीर्थ लिखते हैं :—

"जिधर देखता हूँ, उधर तू ही तू है।
कि हर शह में जलवा तेरा हू बहू है ॥"

दाता दयाल जी ने इसी चश्मे वाहदत की हालत को ब्यान करते हुए कहा है :—

हर शय में कारसाज़ उसी इक ख़ुदा को देख।
शैताँ भी पास आये, तो उसमें ख़ुदा को देख ॥

चश्मे वाहदत की इसी हालत को मैंने अपने निजी अनुभव पर इन शब्दों में बहुत पहले लिखा था :—

"वह नर जहाँ में सुखी है निरन्तर।
कि दिन रात जिसको तेरी जुस्तजू है ॥

तू है सबका स्वामी, तू है सब का दाता।
जो हो जाय तेरा, उसी का हो तू है ॥
जो सबको तुम्हीं में, और तुम्हें सब में देखे।
वह आशिक़ है तेरा और माशूक़ तू है ॥"

यही तीसरी हालत, शरणागत की हालत है। जीवन्मुक्त अवस्था में हर तरफ़ मालिक ही मालिक दिखाई देता है। उस अवस्था में मैं नहीं रहता, तू ही तू रह जाता है। इसमें कोई शक नहीं कि हर एक व्यक्ति ऐसी अवस्था को धीरे-२ पा सकता है, परन्तु पहले-२ यह अवस्था चौबीस घण्टे तक नहीं रहती। जब साधक की यह अवस्था स्थायी हो जाती है तो यह निजधाम की अवस्था कहलाती है, जिसे विदेह मुक्ति की हालत भी कहा गया है। यह रूहानियत की आख़िरी सीढ़ी है, जिसमें न मैं रहता है न तू रहता है। जब साधक अपने आपे में ठहर जाता है, अपनी ज़ात में मिल जाता है तो उसे उस समय यह होश नहीं रहता कि मैं हूँ, और न ही यह होश रहता है कि मैं नहीं हूँ। करोड़ों व्यक्तियों में से कोई बिरला ही जीते जी इस अवस्था पर पहुँच पाता है।

समाधि की हालत में जब साधक को निजधाम

का पता चल जाता है तो वह इसमें ठहरने की कोशिश करता है। परन्तु कोई भी सन्त, महात्मा या परम सन्त इस हालत में अधिक समय तक ठहर नहीं सकता। इस दर्जे को ठीक-२ बताने के लिए कोई भी भाषा पूर्ण नहीं है। यह परम शान्ति की हालत है, इसलिए इसे ब्यान करने की ज़रूरत भी नहीं है। संसार के सभी महान सन्त इसी हालत पर पहुँच कर ख़ामोश हो जाते हैं। दाता दयाल जी महाराज ने इस हालत के बारे में लिखा है :—

बूँद पानी में मिला, दरिया बना, क्या जुस्तजू।
ज़ात में जब मिल गया, तो फिर करें क्यों गुफ़्तगू॥

इसी परमधाम या निजधाम की हालत पर पहुँचने के लिए ही अलग-२ धर्म और फ़िरके अलग-२ साधन या ज़रिए अपनाते हैं। इसी हालत पर पहुँचने के लिए ही सत्संग, सद्‌गुरु तथा सत नाम की ज़रूरत है। इस हालत पर पहुँचने पर सुरत और शब्द एक हो जाते हैं और "राधा" "स्वामी" में मिल जाती है। नाम दान की यही अवस्था ही सबसे बड़े दान, अभयदान की हालत है। अभयदान पा कर साधक को किसी प्रकार का भी भय नहीं रहता, वह

अपनी ज़ात में ठहर जाता है, वह जीवन्मुक्त हो जाता है। वह सब प्रकार का फ़र्ज़ निभाता हुआ भी दुनिया में फँसता नहीं। वह साक्षी बन जाता है, उसके सभी काम क़ुदरत ख़ुद ही करती है।

आज के सत्संग में मैंने आपको दान की सबसे ऊँची हालत की व्याख्या की है। आशा है आपकी समझ में आ गया होगा। आपको याद होगा कि सभी धर्मों में दान, यज्ञ, तप: तथा कर्म के चार लक्षणों के महत्त्व पर मासिक सन्देश शुरू करते हुए, मैंने आपको कहा था कि इन सभी लक्षणों की बारी-2 से व्याख्या की जायेगी। आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि दान, यज्ञ, तप: और कर्म चार लक्षण हैं, जो निजधाम पर पहुँचने के लिए साधन या तरीक़े ही हैं, जिनको अपनाने से लोक तथा परलोक दोनों सुधर सकते हैं, फिर भी ये चारों लक्षण अपने आप में लक्ष्य नहीं हैं। लक्ष्य तो इनसे बहुत ऊँचा है। धर्म पर अन्ध-विश्वास रखने वाले लोगों ने इन चार लक्षणों को ठीक-२ समझा ही नहीं और वह रीति, रिवाज, दिखावा तथा आडम्बर के झमेलों में फँस गए। आज यह ज़रूरी हो गया है कि सन्त

मत तथा सत् सनातन धर्म को सही दृष्टि से इन चारों लक्षणों की सही व्याख्या को समझ कर उसे जीवन में उतारा जाय।

अगले मासिक सन्देशों में यज्ञ के साधन या लक्षण की व्याख्या की जायेगी। इन शब्दों के साथ मैं आपको एक बार फिर सद्भावना भेजता हूँ और परम तत्त्व से प्रार्थना करता हूँ कि आपको स्वास्थ्य, सम्पत्ति और शान्ति मिले।

सब को राधास्वामी !

आपका फ़क़ीरमय
मानव

चमत्कारों के मुख्य प्रकार और मानवता धर्म

लेखक

परम सन्त हज़ूर मानव दयाल डा० ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज

चमत्कारों का सम्बन्ध सत्य से है और मानवता धर्म सत्य के धर्म का एक सीधा-सा रूप है। नित्य प्रति घटने वाले चमत्कारों की अलग-अलग किस्मों या प्रकारों की व्याख्या करने से पहले यह बताना ज़रूरी है कि वे मनुष्य के मन से क्या सम्बन्ध रखते हैं। यह भी बताना ज़रूरी है कि मनुष्य के मन का ब्रह्माण्ड के मन या सहस्रदल कमल से, जिसे सन्त मत में काल कहा गया है, क्या सम्बन्ध है।

सन्त मत का अन्तिम रूप 'राधास्वामी' है, जिसे

फ़कीर बाबा ने आत्मा के अनुभव के लिए अपनाया है। किन्तु अगर असल में देखा जाय तो यह मत कोई अलग नहीं है। यह उस सनातन धर्म से ही निकला है, जिसकी व्याख्या वेदों, उपनिषदों; पुराणों की कथाओं में, धर्मशास्त्रों में, न्याय, वैशेषिक, सांख्य योग, मीमांसा और वेदान्त में की गई है। इसी कारण फ़क़ीर बाबा के पूज्य गुरु दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी वर्मन ने हिन्दू धर्म के इन सभी पहलुओं पर अपने हज़ारों लेखों और पुस्तकों में बहुत प्रकाश डाला है।

सनातन धर्म बहुत ही प्राचीन धर्म है, जिसका मतलब है हमेशा रहने वाला, जिसका न आदि है न अन्त। यदि वेदों को इस धर्म का आधार माना जाय, तो इसे वैदिक धर्म भी कहा जा सकता है। वेद उन आदि ऋषियों या सनातन सन्तों की वाणी हैं, जिन्होंने सत्य की खोज में अपनी सारी ज़िन्दगी लगा दी। क्योंकि वेदों, उपनिषदों और भगवद्गीता का गूढ़ ज्ञान संस्कृत भाषा में लिखा है, इसलिए आम लोग यह नहीं जानते कि उनमें क्या लिखा है। यदि इस सनातन धर्म की पूरी खोज करके उनकी व्याख्या को सीधी-सादी सरल भाषा में लिखा जाय तो फ़कीर

बाबा का यह कहना बिल्कुल सत्य साबित होगा कि सन्त मत और सनातन धर्म में कोई अन्तर नहीं है। प्राचीन ऋषियों ने योग साधना के द्वारा ब्रह्माण्ड, ईश्वर और मनुष्य को ठीक-ठीक समझने की कोशिश की। उन्होंने यह बताया कि मनुष्य अपने आदि या असली घर या परम तत्त्व से अलग हो गया है, इसलिए वह भटक रहा है, किन्तु वह वापिस उस परम धाम को लौट सकता है।

इसी सनातन धर्म या आदि धर्म को तीन हज़ार साल पहले हिन्दू धर्म के नाम से पुकारा जाने लगा। इसे हिन्दू धर्म नाम तो ईरानियों ने दिया जो तीन हज़ार साल पहले भारत में आये। जब ईरानियों ने सिन्धु नदी के किनारे पर बसे हुए, इन सभ्य लोगों को इस सनातन धर्म पर चलते हुए देखा तो वे इनसे बहुत ही प्रभावित हुए। क्योंकि वे सभ्य लोग सिन्धु नदी के किनारे पर बसे हुए थे; इसलिए ईरानियों ने सिन्धु-वासी या सिन्धु नदी के किनारे रहने वाला कहा। ईरानी 'स' को प्रायः 'ह' कहकर पुकारते हैं इसलिए सिन्धु के स्थान पर उन्होंने हिन्दू शब्द का प्रयोग किया और सनातन धर्म पर चलने वाले लोग हिन्दू कहलाने लगे और सनातन धर्म का नाम हिन्दू धर्म

हो गया। तभी से यह नाम चला आ रहा है। किन्तु उससे पहले ईसा से दस हज़ार वर्ष पहले या इससे भी पहले यह सनातन धर्म लम्बे-चौड़े पूरे भारत में फैला हुआ था। उस समय इस देश का नाम भारत था, हिन्दुस्तान नहीं।

अब धर्म शब्द की यहाँ व्याख्या देना ज़रूरी है क्योंकि धर्म शब्द को ठीक तरह से न समझने के कारण ही दुनिया में बड़ी-बड़ी ग़लतफ़हमियाँ फैली हुई हैं। धर्म का मतलब ठीक तरह से न समझने के कारण ही दुनिया में कई छोटे और बड़े युद्ध हुए हैं और हो रहे हैं। 'धर्म' शब्द संस्कृत भाषा के 'धृ' से निकला है, जिसका अर्थ है धारण करना या सहारा देना। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि धर्म का अर्थ वह आधार है जो वस्तुओं को सहारा देता है। तत्त्व की दृष्टि से धर्म सभी वस्तुओं और जीवों का परमधाम है। देश, काल और कारण सभी इसी परम तत्त्व या आधार से निकले हैं, जिसे अलग-अलग धर्मों और दर्शनों ने अलग-अलग नाम दे दिए हैं, वेदों तथा उपनिषदों में इसको ब्रह्म कहा गया है, जिसके चार स्तर हैं :—

1. अव्यय ब्रह्म या अनन्त परम सत्ता,

२. अक्षर ब्रह्म या अविनाशी परम सत्ता,

३. आत्मक्षर ब्रह्म या वह परम सत्ता, जिसमें सृष्टि को पैदा करने, पालन करने तथा उसका संहार करने की तीनों शक्तियाँ मौजूद हैं।

४. विश्वसृत ब्रह्म या वह सर्वव्यापक शक्ति, जिसमें सभी ब्रह्माण्ड, सौर मण्डल, पृथ्वी, चन्द्र, आदि पैदा हुए हैं।

ब्रह्म के पहले तीन स्तर या पाद देश और काल से परे हैं। इन तीनों को परम पुरुष कहा गया है, जिसमें सृष्टि की रचना, उसका पालन तथा संहार की शक्तियाँ हैं। यह परम पुरुष विश्व में अपने आप को बदल नहीं देता, किन्तु उसका केवल एक अंश ही सारी सृष्टि को पैदा कर देता है। सारा जगत् ब्रह्म का स्वरूप कहलाता है। ब्रह्म के पहले तीन पाद दिक् देश, काल से परे होते हुए भी आंशिक रूप में विश्व में मौजूद रहते हैं। इसलिए ही विश्व को आत्मक्षर ब्रह्म का छोटे से छोटा अंश कहा गया है।

एक दृष्टि से ब्रह्म के पहले तीन पाद विश्व से

परे भी हैं और सूक्ष्म रूप से विश्व में मौजूद भी हैं। सन्तों ने विश्व में मौजूद को सूक्ष्म, स्थूल और कारण कहा है। सारी सृष्टि परम तत्त्व का चौथा पाद है। मनुष्य में स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों तत्त्व, उसका शरीर, मन और बुद्धि हैं और सृष्टि में स्थूल, सूक्ष्म और कारण रूप, भौतिक तत्त्व, मन और प्रकाश हैं। परम पुरुष का वह अंश ही ऐसी अविनाशी सत्ता है, जो सारे बिम्ब के तीन रूपों में मौजूद है। मनुष्य में 'सुरत' या विशुद्ध आत्मा, उसके कारण (जीवात्मा), सूक्ष्म (मन) और स्थूल (भौतिक) शरीरों का कभी नाश न होने वाला आधार है। मनुष्य और विश्व के कारणात्मक शरीर यानि कि प्रकाश को अन्तिम समझ लिया गया है। किन्तु यह बात सत्य नहीं है: वेदों और सन्तों का दर्शन, इस दृष्टि से प्रकाश से भी परे जाता है और चौथे पद को परम तत्त्व मानता है।

तथाकथित चमत्कारों को झूठ नहीं कहा जा सकता, किन्तु उनका सम्बन्ध स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण शरीरों से है, सुरत, विशुद्ध आत्मा या चौथे पद से नहीं है। जब हम स्थूल शरीर के अनुभव से सूक्ष्म शरीर के अनुभव पर पहुँचते हैं, तो वह अनुभव हमें

चमत्कार जैसा दीखता है। उसका कारण यह होता है, कि हमें सूक्ष्म तत्त्व का ज्ञान नहीं होता। उदाहरण के तौर पर योग साधना से बड़े-बड़े सन्तों-महात्माओं को दूर-दूर की घटनाओं का ज्ञान घर बैठे ही हो जाता है। वे भविष्य की बातें भी बता देते हैं, उसका कारण यह होता है कि वे सूक्ष्म शरीर को भी वैज्ञानिक तरीक़े से इस्तेमाल करते हैं। उनके लिए सूक्ष्म शरीर भी वैसे ही काम करता है जैसे हमारे लिए स्थूल शरीर। हमारे लिए जो घटनाएं चमत्कारी दीखती हैं या वरदान-सी दीखती हैं वे उनके लिए न तो चमत्कारी होती हैं और न ही वरदान। यहाँ पर यौगिक सिद्धियों के बारे में इस लिए नहीं बताया गया, क्योंकि वे मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य हैं, परन्तु वे सिद्धियाँ थोड़ा बहुत महत्त्व रखते हुए भी, परम लक्ष्य न होते हुए भी झूठी नहीं हैं। उनका अपना स्थान है, अपनी एक सीमा है। मनुष्य का परम लक्ष्य तो वह तत्त्व है, जो सब तरह के भौतिक, मानसिक और कारण शरीरों से परे है और जिसे मनुष्य के सम्बन्ध में सुरत और ब्रह्माण्ड के सम्बन्ध में अनामी कहा गया है। मनुष्य में उसका परम आधार उसकी शुद्ध आत्मा या सुरत ही है।

परम आधार या परम धर्म पर पहुँचने के लिए कुछ ऐसे नियमों का होना ज़रूरी है, जिन्हें जीवन में उतारा जा सके। इसलिए ऐसे नियमों को धर्म कहा गया है। परम आधार की दृष्टि से धर्म लक्ष्य है, साधन नहीं। इसलिए धर्म शब्द का अर्थ आध्यात्मिक अवस्था है।

आध्यात्मिक अवस्था के रूप में धर्म वह स्तर है जिसे पूर्ण सन्त ही पा सकता है और जिस अवस्था को जीवन्मुक्ति की अवस्था कहा जाता है। यही अवस्था ईश्वरानुभूति भी कहलाती है। यह जीवन की वह अवस्था है, जिस पर पहुँचकर मनुष्य सुख-दुःख, लाभ-हानि, निन्दा-स्तुति, शुभ और अशुभ के चक्कर से ऊपर उठ जाता है। इसका कारण यह है कि परम सत्ता सब द्वन्द्वों से परे है। ऐसी अवस्था को न तो एक कहा जा सकता है और न ही अनेक। वह एक ऐसी पूर्णता की हालत है; जिसको शब्दों में बताया नहीं जा सकता। भगवद्गीता में ऐसी स्थिति को स्थितप्रज्ञता की हालत कहा गया है। इसका दूसरा नाम ब्राह्मी स्थिति भी है। यह ऐसी अवस्था है, जिसे पाकर मनुष्य के सारे संशय दूर हो जाते हैं और उसे पूरी

शान्ति मिलती है। इस हालत के बारे में भगवान् कृष्ण, अर्जुन को कहते हैं, "हे अर्जुन ! यह आत्मा की ऐसी अवस्था है, जिसे पाकर मनुष्य के मन में कोई भ्रम नहीं रह जाता । मृत्यु के समय मनुष्य इसी अवस्था में रहने के कारण मुक्त हो जाता है ।"*

यदि किसी व्यक्ति ने जीते जी इस अवस्था को प्राप्त नहीं किया, तो देह छोड़ने पर उसे मुक्ति नहीं मिल सकती। मरने से पहले इस अवस्था को प्राप्त करना या शरीर, मन और अहंकार के अनुभवों से ऊपर उठना बहुत ज़रूरी है। शरीर, मन, बुद्धि के स्तरों को ही काल कहा गया है। काल की सीमा तक ये स्तर सच्चे हैं, किन्तु ईश्वर का सच्चा धाम इनसे परे है। वह अनन्त सत्, अनन्त चित् और अनन्त आनन्द है, इसलिए वह काल से परे है। देश, काल और कारण का ब्रह्माण्ड परम तत्त्व के अनन्त समुद्र की एक बूँद पर आधारित है। यह सन्तों के उस दर्शन का निचोड़ है, जिसे फ़कीर बाबा ने अनुभव किया है और जिसका वह लगातार प्रचार कर रहे हैं। उन्होंने अपनी सीधी-सादी, लोगों की

*भगवद्गीता, दूसरा अध्याय—श्लोक 72

समझ में आ जाने वाली भाषा में, उस परम तत्त्व की व्याख्या की है, जिसे वेदों, उपनिषदों तथा गीता ने संस्कृत भाषा में बताया है। लेकिन फ़कीर बाबा ने जो कुछ भी बताया है इन शास्त्रों को पढ़कर नहीं बल्कि अपने निजी अनुभव के बाद ही बताया है। सत्य तो सत्य ही है, उसकी खोज चाहे दर्शन द्वारा की जाय, धर्म-ग्रन्थों का हवाला देकर की जाय, विज्ञान द्वारा की जाय या अपने अन्दर के अनुभव से। किन्तु लोग किताबी ज्ञान को ही एकमात्र साधन मान कर लोगों को उपदेश देते हैं, उनका असर न ही लोगों पर पड़ता है और न उनको स्वयं ही जीवन्मुक्ति मिलती है। अधिकतर लोग गीता या किसी अन्य शास्त्र या धर्म-ग्रन्थ को रोज़ पढ़ते हैं, किन्तु फिर भी उन्हें सच्चे धर्म का ज्ञान नहीं होता। इसका कारण यह कि उन ग्रन्थों में बताए गए सार को वह अपने जीवन में नहीं उतारते और मानवता का मतलब तो बिल्कुल ही नहीं समझते।

सच्चे मानवता धर्म को समझने के बाद ही असली धर्म समझ में आता है और सच्चे ईश्वर के रूप की पहचान होती है। ऐसा ज्ञान पा लेने के

बाद ही मनुष्य धार्मिक झगड़ों से बच सकता है। असल में यदि ग़ौर से देखा जाय तो दुनिया के तमाम धर्मों में मानवता को किसी न किसी रूप में माना गया है। कोई भी धर्म यह नहीं कहता कि आपस में बैर रखो और दूसरे धर्मों की निन्दा करो। सभी धर्म ईश्वर के एक होने तथा उसके हर जगह हाज़िर-नाज़िर होने में विश्वास रखते हैं। अर्जुन को भक्तिमार्ग का उपदेश देते हुए भगवान् कृष्ण ने भगवद्गीता में कहा है, "मैं तुम्हें उस रहस्य को बताऊंगा, जो ज्ञान और विज्ञान पर आधारित है। हे मेरे प्रिय अर्जुन! तुम इस भेद या रहस्य को जान कर हर तरह के अशुभ से बच जाओगे। सत्य का यह महान् ज्ञान राज-विद्या कहलाता है। यह सनातन धर्म है। विश्व की सम्पूर्ण सत्ता अथवा तत्त्व मुझ पर आधारित है और मैं स्वयं अव्यक्त रूप हूँ। सभी भूत मुझ पर निर्भर हैं, किन्तु मैं उन पर निर्भर नहीं और न ही उनमें स्थित हूँ। मैं सभी भूतों का आधार भी हूँ, उनको धारण भी करता हूँ और फिर भी मेरी असली सत्ता भूतों में स्थित नहीं है।"*

*भगवद्गीता, नवाँ अध्याय, श्लोक 1,2,4,5

भगवद्‌गीता की यह व्याख्या यह प्रश्न पैदा कर सकती है कि जब ईश्वर सब जगह ही मौजूद है तो यह कैसे कहा जा सकता है कि वह सभी भूतों में स्थित नहीं है। एक ओर तो यह बताया जाता है कि सभी भूत ईश्वर से पैदा होते हैं और दूसरी ओर यह बताया जाता है कि ईश्वर उनमें स्थित नहीं है। यदि हम इस गूढ़ रहस्य को समझ जायँ तो हम जीते जी द्‌वन्द के दु:खों से बच सकते हैं। इस गूढ़ रहस्य को फ़क़ीर बाबा ने अपने अनुभव के बाद इस तरह समझाया है, "इसलिए ईश्वर शक्ति का वह एकमात्र स्रोत है, जिसे सत् लोक, अलख और अगम कहा जाता है। यह विश्व उसी का ही खेल है, लेकिन वह स्वयं इस खेल से अलग है।"

इस अलगाव की व्याख्या करने के लिए फ़क़ीर बाबा बिजली की ताक़त और उसकी धार या करन्ट की मिसाल देते हुए कहते हैं, "मैं आपको एक बैट्री का उदाहरण दे रहा हूँ, जिसमें बिजली की ताक़त और करन्ट होती है। एक करन्ट या धार, शक्ति की वोल्टेज से आती है। हम उस एक करन्ट से बहुत-सी और धाराएँ ले सकते हैं। उसी एक ही करन्ट को तारों द्‌वारा अलग-अलग लाइनों से सात-आठ सौ मील या इससे भी अधिक दूरी तक पहुँचाया जा

सकता है । भाकरा डैम से एक करन्ट चलती है, जिसके द्वारा हर जगह हज़ारों पंखे, मशीनें तथा कारखाने चलते हैं । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हमारी शक्ति का एकमात्र आधार सत् लोक या अगम लोक है । उससे जो करन्ट निकलती है, वह काल है । आज का विज्ञान भी इस नतीजे पर पहुँचा है कि सारा विश्व एक प्रकार की शक्ति है और यह शक्ति एक तरह की बिजली है । मैंने एक किताब में पढ़ा था कि मनुष्य के शरीर में इतनी बिजली होती हैं कि जिसके द्वारा एक पूरे शहर को रौशनी दी जा सकती हैं । जब उसकी बिजली समाप्त हो जाती है, तो वह व्यक्ति मर जाता है ।

"विश्व के हर भाग में अलग-अलग करन्ट होती है । विश्व में जो वस्तु पैदा होतो है, उसका नाश भी होता है । जो विचार मनुष्य के मन के अन्दर पैदा होता है, वह कुछ समय बाद समाप्त भी हो जाता है । इस ब्रह्माण्ड में कोई भी चीज़ हमेशा के लिए नहीं रहती, किन्तु वह सत्, जो अलख और अगम है, सदा रहेगा । जिस तरह करन्ट के समाप्त हो जाने पर पंखा बन्द हो जाता है किन्तु इलैक्ट्रो-

मोटर फ़ोर्स, जो बिजली की करन्ट का केन्द्र है, फिर भी बना रहता है, उसी प्रकार परम तत्त्व ईश्वर जो शक्ति का परम आधार है अविनाशी है।"*

यह व्याख्या इस बात को स्पष्ट करती है कि करन्ट का अविनाशी आधार करन्ट की एक धार से आता है। यही कारण है कि सन्तमत के दर्शन के अनुसार सारे विश्व को परम तत्त्व की एक बूंद पर ही आधारित माना गया है।

इलैक्ट्रोमोटर फ़ोर्स को करन्ट से अलग बता कर फ़कोर बाबा ने यह स्पष्ट कर दिया है कि सृष्टि और सृष्टि का स्रोत एक दूसरे से अलग हैं। ईश्वर जो कि सृष्टि का आधार है, एक अनन्त शक्ति है, सृष्टि में एक करन्ट के रूप मैं मौजूद है, जैसे कि सूर्य इस पृथ्वी पर किरणों के रूप में मौजूद है। उस सूर्य की किरणें उसका सूक्ष्म रूप हैं। ठीक उसी तरह सभी आत्माएँ ईश्वर की दिव्य धारा का सूक्ष्म रूप हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य इस दृष्टि से ईश्वर नहीं कि वह ईश्वर के समान है या ईश्वर से एक है। जब तक मनुष्य देश, काल और कारण

*मानव मन्दिर, अक्तूबर 1980, पृष्ठ 14

को सीमा में होता है, वह ईश्वर से एक हो ही नहीं सकता। ब्रह्माण्ड में उपस्थित सभी चीज़ें, सूर्य, पृथ्वी, चन्द्र और अनेक विश्व ईश्वर का आंशिक रूप हैं और वे ठीक उसी प्रकार ईश्वर पर निर्भर हैं, जिस प्रकार कि बिजली की करन्ट और मशीनें इलैक्ट्रामोटिव पर निर्भर होती हैं। किन्तु ईश्वर पूर्ण रूप से सृष्टि की सभी वस्तुओं में मौजूद नहीं। हम यह भी नहीं कह सकते कि सृष्टि की सभी चीज़ें मिलकर यानि कि इन सब को जोड़ कर या सबके जोड़ को मिला कर ईश्वर के बराबर माना जा सकता है। इसका कारण यह है कि सृष्टि के सभी चराचर मिल कर भी ईश्वर की शक्ति की एक बूँद से भी कम हैं। समुद्र की एक बूँद बेचारी समुद्र की तह का पारावार कैसे पा सकती है, उसके बराबर कैसे हो सकती है ?

राधास्वामी मत के आधार श्री स्वामी जी महाराज के एक पद की व्याख्या करते हुए फ़कीर बाबा ने लिखा है :—

"मैं ठीक कहता हूँ कि ये जितने ब्रह्मा, विष्णु, महेश हैं Physical and mental मादा के हैं। हमारा असली घर तो मन और प्रकाश से परे है;

ब्रह्मा से भी परे है। अगर आख़िरी स्थान ब्रह्मा ही होता, तो सत श्री अकाल कौन बोलता। सिक्खों ने गुरु नानक साहिब को क्या समझा? उन्होंने तो केवल एक पन्थ बनाने के लिए गुरु नानक साहिब को अपनी ज़ायदाद बना लिया। गुरु नानक साहिब हर एक मनुष्य के लिए थे, वह कोई सिक्खों की जायदाद नहीं थे और न हैं। सन्त किसी भी मज़हब का अनुयायी नहीं होता और न ही वह कोई पन्थ चलाता है। पन्थ चलाने वाले जो अगले चेले होते हैं, वही होते हैं। राधास्वामी दयाल ने स्वयं कोई पन्थ नहीं चलाया, वह तो उनके आगामी चेले थे उन्होंने पन्थ का नाम रख दिया। उनका कोई पन्थ नहीं था जैसा कि मेरा कोई पन्थ नहीं।"*

फ़कीर बाबा ने ईश्वर के सच्चे रूप के आधार पर ही सभी धर्मों की एकता पर ज़ोर दिया है। भिन्न-भिन्न धर्मों ने ईश्वर की शक्ति की धार के अंश पर ही ज़ोर दिया है। समुद्र की बूँद जो उसका अंश होती है, समुद्र की बराबरी नहीं कर सकती, उसे कोई भी समुद्र के समान नहीं मान सकता। ठीक

*मानव मन्दिर, अक्तूबर 1980, पृ० 25-26

उसी प्रकार ईश्वर के आंशिक रूप को पूर्ण ईश्वर नहीं माना जा सकता। अलग-अलग धर्मों के चलाने वालों, पैग़म्बरों, अवतारों ने हमेशा यह बताने की कोशिश की है कि ईश्वर अनन्त है और ईश्वर की शक्ति के बाहरी रूप को ईश्वर के बराबर नहीं मानना चाहिए। किन्तु प्राय: सभी धर्मों के अनुयायियों ने सदा धार को आधार मान लिया और ब्रह्माण्ड को अनन्त ईश्वर मानकर बड़ी भूल की है। ज़रा सोचने की बात है, क्या सूर्य यहाँ पृथ्वी पर रहता है ? अगर सूर्य सचमुच ही पृथ्वी पर नीचे आ जाय तो क्या हम सब जल नहीं जायेंगे ? सूर्य स्वयं पृथ्वी पर नहीं आता, किन्तु उसकी किरणें ही आती हैं। इसी प्रकार ईश्वर भी पूर्ण रूप से पृथ्वी पर नहीं आता, वह अपना अंश, सन्तों, महात्माओं, पैग़म्बरों या अवतारों के रूप में पृथ्वी पर वक्त की ज़रूरत के मुताबिक भेजता रहता है। जब ईश्वर पूर्ण रूप से पृथ्वी पर नहीं आता, तो हम उसकी पूर्णता को जान कैसे सकते हैं और यह भी कैसे कहा जा सकता है कि किसी ख़ास धर्म या मत में ही पूरे सत्य को जाना जा सकता है। बात असल में यह है कि भिन्न-भिन्न धर्मों पर चलने वाले अन्धविश्वासी भक्त,

अज्ञानता के कारण चमत्कारी घटनाओं से प्रभावित होकर, अपने-अपने गुरुओं या धर्म को चलाने वाले महानुभावों को ही सच्चा या पूरा ईश्वर मान लेते हैं। वे दूसरे धर्मों या मतों की निन्दा करते हैं और भोलेभाले अपने अनुयायियों को असलियत नहीं बताते।

चमत्कारों को झूठा नहीं कहा जा सकता, उनका भी अपना स्थान है, अपना महत्त्व है। किन्तु चमत्कारों का सम्बन्ध सच्चे पूर्ण ईश्वर से न होकर, केवल उसके उस सूक्ष्म रूप से है, जिसे काल और माया कहा गया है। वही सूक्ष्म रूप विचार या मन मनुष्य में भी है। जब मनुष्य मन को एकाग्र या इकट्ठा कर लेता है तो वह चमत्कारों को पैदा कर सकता है। ये चमत्कार दो प्रकार के होते हैं।

(१) बाहरी और
(२) आन्तरिक।

विज्ञान की सभी खोजें और आविष्कार वैज्ञानिकों के सूक्ष्म विचार के कारण का ही फल हैं। यदि हम ग़ौर से देखें तो हमें पता चलेगा कि वे केवल उस समय घटते हैं, जब हमारा मन स्थिर होता

है। यदि हममें से कोई किसी समस्या पर वैज्ञानिकों की तरह अपने विचार को एकाग्र कर लें तो हम भी चमत्कारी घटनाओं को घटित कर सकते हैं, हम भी किसी नये नतीजे पर पहुँच सकते हैं, जो कोई वैज्ञानिक असूल या कोई नई खोज हो सकता है। इस युग के नये-नये आविष्कार और खोजें, जिन्होंने मानव जाति को भौतिक सुख तथा आराम दिये हैं, वे सब वैज्ञानिकों की मन की एकाग्रता के कारण ही हुई हैं। वैज्ञानिक भी एक प्रकार से ऋषि, सन्त या महात्मा होते हैं, क्योंकि ये सत्य की खोज में लगातार लगे रहते हैं और नित्य नये आविष्कार करते हैं, जिन्हें एक दृष्टि से चमत्कार ही कहा जा सकता है। आज इन वैज्ञानिकों की मेहरबानी के कारण ही मनुष्य लोक-लोकान्तरों की खोज में आगे बढ़ रहा है। ये सब चमत्कार मन को एकाग्र करने के कारण ही घटते हैं और इन्हें मन को इकट्ठा करने के बाहरी चमत्कार कहते हैं, किन्तु मन के लोक-लोकान्तर अनन्त हैं और उनकी शक्तियाँ भी अनन्त हैं। जब मन को अन्दर की ओर ले जाकर ध्यान लगाया जाता है, तो विश्व और मनुष्य के सूक्ष्म रूप का पता लग जाता है। रोगों के दूर होने, ईश्वर, अवतारों या गुरुओं के रूपों को देखने, पानी पर चलने, हवा में उड़ने, चन्द्र और सूर्य लोक आदि में सूक्ष्म शरीर द्वारा यात्रा आदि करने के, जितने भी

तथाकथित चमत्कार हैं सभी मन के अन्दर ध्यान लगाने के फल हैं। राजयोग में आन्तरिक या अन्दर के ध्यान द्वारा सिद्धियों को प्राप्त करने के तरीक़े बताए गए हैं। जब मन को अन्दर की ओर ले जाकर, ईश्वर या गुरु के रूप या मन्त्र पर ध्यान लगाया जाता है, उस समय होता यह है कि मन बाहरी भौतिक चीज़ों से हटकर विश्व के सूक्ष्म रूप से जुड़ जाता है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य का मन स्थूल जगत् से हटकर विश्वव्यापी मन से जुड़ जाता है। जब तक मन का लगाव भौतिक चीज़ों में फँसा रहता है, तब तक उसको एकाग्र या इकट्ठा नहीं किया जा सकता और बिना मन की एकाग्रता के किसी भी तरह के तथाकथित चमत्कारों का अनुभव नहीं हो सकता।

अब सवाल यह होता है कि ऐसे-ऐसे लोग जो मन को एकाग्र करने के बारे में कुछ भी नहीं जानते उन्हें फ़कीर बाबा के रूप प्रकट होने के चमत्कारी अनुभव क्यों होते हैं?

इस प्रश्न का उत्तर बहुत सीधा-सादा है। आम-तौर पर हमारा मन हमेशा इधर-उधर भटकता रहता है, एक जगह टिकता नहीं। जब कोई व्यक्ति बहुत दुःखी होता है और उसे उस दुःख से छुटकारा पाने का कोई भी तरीक़ा नहीं सूझता, तो वह मन को सब ओर से हटाकर प्रार्थना के द्वारा मदद लेने के लिए क्षण भर के लिए फ़कीर बाबा के ध्यान

में लगा देता है। उसका पक्का विश्वास, उसके मन को और सभी चीज़ों से हटाकर केवल इस विचार में ही लीन कर देता है कि केवल फकीर बाबा ही उसे मुसीबत से बचा सकते हैं। यही कारण है कि फकीर बाबा के प्रकट होने का चमत्कार घटित होता है। यदि जीवन में सच्ची मानवता के धर्म का पालन किया जाए, तब भी ऐसी चमत्कारी घटनाओं का अनुभव हो सकता है। किन्तु खेद की बात तो यह है कि अधिकतर लोग इन तथाकथित चमत्कारों। से इतने मोहित हो जाते हैं कि वे वहीं रुक जाते हैं, सचमुच यही समझते हैं कि उनकी मदद किसी बाहरी ताकत ने की है। अपने-अपने विश्वास या अपने-अपने धर्म-प्रभाव के कारण, वे जिस रूप में विश्वास रखते हैं. केवल उसी को ही सबसे श्रेष्ठ मानकर दूसरे धर्मों को झूठा या छोटा समझते हैं। इसी अन्ध-विश्वास के कारण ही समाज छोटे-छोटे हज़ारों धर्मों व मत-मतान्तरों में बँट गया है। फकीर बाबा ने इस अन्धविश्वास को मिटाने के लिए ही यह भेद खोल दिया है कि चमत्कारों का कारण कोई बाहरी शक्ति, कोई देवता, गुरु या पैगम्बर नहीं है, बल्कि मनुष्य का अपना ही मन और विश्वास है।

मन के विश्वास के कारण ही चमत्कार घटित होते हैं, चाहे वह विश्वास किसी व्यक्ति विशेष में हो या किसी देवता में। किन्तु जब तथाकथित चमत्कार घटता है, तो अनुभव करने वाला व्यक्ति इस भ्रम में पड़ जाता है कि ऐसा चमत्कार उसके गुरु या देवता के कारण ही घटा है। इस विचार के कारण, उसका अपने धर्म और गुरु में विश्वास और भी बढ़ जाता है और वह कट्टर तथा तंग-दिल बन जाता है। यदि मनुष्य को इस बात का सच्चा ज्ञान हो जाए कि चमत्कारी घटनायें उसके अपने ही विश्वास के कारण ही घटित होती हैं, तो वह धार्मिक कट्टरता से बच सकता है।

इसमें कोई शक नहीं कि चमत्कारों के अनुभव के कारण कई नास्तिक व्यक्ति ईश्वर में विश्वास करने लगते हैं, किन्तु उनको इस बात का ज्ञान नहीं होता कि ईश्वर है क्या।

फकीर बाबा ने सदा इस बात पर ज़ोर दिया है कि मनुष्य अपने परम लक्ष्य को समझे और चमत्कारों से इतना

मोहित न हो जाय कि अपने सच्चे घर के रास्ते से भटक जाय। मनुष्य का परम लक्ष्य तो सभी प्रभावों से परे है। उस लक्ष्य को पाकर ही मनुष्य को परम शान्ति मिल सकती है।

अब सवाल यह है कि इस लक्ष्य को पाया कैसे जाय ? इस सवाल का जवाब देने के लिए चमत्कारों की थोड़ी-सी और व्याख्या देना ज़रूरी है। चमत्कारी घटनाओं को दो भागों में बाँटा जा सकता है :—

(1) अचानक घटने वाले चमत्कार, और

(2) असली प्रकार के चमत्कार।

अचानक घटने वाले चमत्कार मन के अन्दर अभ्यास के बिना ही घटित हो जाते हैं, क्योंकि ऐसी हालत में मन अन्धविश्वास के कारण क्षण-भर के लिए एकाग्र हो जाता है और चमत्कारी घटनाओं का अनुभव होता है। किन्तु भविष्य-वाणी, पानी पर चलना, हवा में उड़ना, दूसरों के मन की बात जान लेना आदि के चमत्कार आमतौर पर असली प्रकार के होते हैं। किन्तु जब कभी ऐसे अनुभव मन के अन्दर के अभ्यास के बिना ही घटित हो जाएँ, तो उन्हें अचानक घटने वाले चमत्कार ही माना जायेगा। जब चमत्कार योग साधना के लगातार अभ्यास के कारण ही घटित होते हैं, तो उन्हें यक़ीनन असली प्रकार के चमत्कार ही माना जायेगा, अचानक घटने वाले चमत्कार नहीं। इसमें शक नहीं कि चमत्कारी घटनाओं का कारण मन की एकाग्रता तथा मन की पवित्रता ही है, परन्तु इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि मन की पवित्रता की अन्तिम सीढ़ी चमत्कार ही है, वह तो चमत्कारों से परे है।

अचानक घटने वाले चमत्कारों से लोगों में कट्टरता और अन्धविश्वास बढ़ता है, जिससे मानवता को हानि पहुंचती है और इस किस्म के चमत्कारों का अनुभव करने वाले व्यक्ति को हमेशा लाभ नहीं होता। उसका कारण यह है कि इस प्रकार के चमत्कार हर समय नहीं घट सकते और जब वे नहीं घटते तो अन्धविश्वासी का अपने देवता, गुरु या महात्मा से विश्वास टूटना शुरू हो जाता है। किसी भी व्यक्ति की सभी इच्छाएं उस समय तक पूरी नहीं होतीं, जब तक कि उसका मन पूरी तरह पवित्र न हो जाय।

किसी व्यक्ति विशेष, गुरु या ईश्वर के रूप में केवल अन्ध-विश्वास रखने से मन को थोड़ी देर के लिए शान्ति भले ही मिले, किन्तु उससे मन में पूरी पवित्रता नहीं आती। मन की पवित्रता के लिए मानवता धर्म के असूलों पर चलना बहुत ज़रूरी है।

जब व्यक्ति चमत्कारी घटनाओं के घटने को साधना का ज़रूरी अंग नहीं मानता और न ही उसे अपने जीवन का लक्ष्य मानता है, तो उस समय उसे इस बात का ज्ञान हो जाता है कि चमत्कारी घटनाओं का महत्व कहाँ तक है। यदि किसी सन्त या महात्मा को भी चमत्कारों के असली रूप का ज्ञान न हो, तो वह अपने चेलों का मार्गदर्शन कैसे करेगा। वह उनको लाभ नहीं पहुंचा सकता बल्कि उनको हानि ही पहुंचायेगा। इतना ही नहीं, वह खुद भी चमत्कारों से परे के लक्ष्य पर नहीं पहुंचेगा। उसकी अपनी रूहानी तरक्की भी रुक जायेगी।

यदि गुरु को अपने परम लक्ष्य का ज्ञान है, वह जानता है कि चमत्कारी घटनाएँ बहुत आकर्षित होते हुए भी, हमारे जीवन की अन्तिम सीढ़ी नहीं हैं, तो वह इन चमत्कारी घटनाओं से मोहित होकर वहीं नहीं रुक जायेगा। वह अपनी साधना जारी रखेगा और अपने परम लक्ष्य की ओर बढ़ता चला जायेगा। वह खुद भी पूर्णता की ओर बढ़ेगा और साथ ही साथ दूसरों को भी पूर्णता की ओर ले जायेगा। ऐसी अवस्था में ऐसे सन्तों और महात्माओं को यदि चमत्कारी अनुभव फिर भी होते हैं, तो ऐसी चमत्कारी घटनाएँ अचानक घटने वाली चमत्कारी घटनाएँ नहीं होतीं, बल्कि असली तरह की होती हैं। किन्तु जब कोई व्यक्ति चाहे वह बड़े से बड़ा योगी, महात्मा या सन्त भी क्यों न हो, साधना केवल इसलिए करता है कि उसे सिद्धियाँ मिल जायें और वह उन सिद्धियों के द्वारा लोगों को चमत्कार दिखाकर मोहित कर सके और लोग उसकी वाह-वाह करें, वह कभी भी जीवन्मुक्ति के लक्ष्य पर नहीं पहुंच सकता। उसे जन्म-मरण के चक्कर से कभी छुटकारा नहीं मिल सकता। चमत्कारों से ऊपर उठकर जीवन्मुक्ति के स्तर को कैसे प्राप्त किया जा सकता है, इसकी व्याख्या फकीर बाबा ने बहुत ही सुन्दर तरीके से की है।

परम सन्त हजूर मानव दयाल डा: आई. सी. शर्मा जी महाराज का दशहरे का टूर प्रोग्राम

तिथि स्थान पता

1. 16-10-83 दोपहर सड़क द्वारा मोरादाबाद को प्रस्थान । 1. श्री जे. पी कौशिक साकेत नगर न्यू सिविल लाईन्स मोरादावाद फोन न. 4869 सत्संग का समय 8 बजे सायं

2. 17,18, 19-10-83 बिलारी (सड़क द्वारा) 2. श्री चन्द्र कुमार एडवोकेट नोटरी पब्लिक विलारी ।

3. 20-10-83 प्रात: हापुड़ के लिए प्रस्थान (सड़क द्वारा) 3. श्री विजय कुमार गुप्ता c/o डा. बीरचन्द, रेलवे रोड हापुड़ ।

4. 20-10-83 सायं सरसोंहेड़ी के लिए प्रस्थान (सड़क द्वारा)

5. 20,21,22-10-83 सरसोंहेड़ी (सड़क द्वारा) 5. श्री जयदत्त त्यागी सरसोंहेड़ी ।

6. 23-10-83 प्रात. अलवर के लिए प्रस्थान (सड़क द्वारा)

7. 23,24-10-83 अलवर (सड़क द्वारा) 7. लाला मोहन लाल जगन्नाथ क्लाथ मरचैन्ट, अलवर ।

8. 25-10-83 प्रात. जयपुर के लिए प्रस्थान (सड़क द्वारा) । 8. 16 C (A) मोती मार्ग, बापू नगर, (और) c/o श्री राधेश्याम धूत, धूत हाउस अशोक नगर, जयपुर । टैलीफोन न. 75383

9. 26-10-83 ब्यावर (सड़क द्वारा) श्री मोती चन्द गोलच्छा, गोलच्छा हाउस, अजमेर रोड ।

10. 27.28.29-10-83 उदयपुर (सड़क द्वारा) । यूनिवर्सिटी गैस्ट हाउस एम. बी. कालेज, कालेज रोड टैलीफोन न. 4710

11. 29-10-83 सायं भीलबाड़ा के लिए प्रस्थान (सड़क द्वारा)
c/o जुगल किशोर सराफ
12. 29,30,31- भीलबाड़ा और श्री टी. एन. गुप्ता (चीफ
10-83 (सड़क द्वारा) इन्जीनियर) वनस्पति मिल
13. 1-11-83 प्रात. खण्डवा श्री सूरजमल बीजराज अग्रवाल
(सड़क द्वारा) बुधवारा बाजार।
14. 2,3,4- प्रात. उज्जैन श्री बंसीलाल द्वारका दास गर्ग,
11-83 (सड़क द्वारा) 125, जवाहर बाजार, उज्जैन।
15. 5,6,7,8- इन्दौर श्री कुंजीलाल गोयल 73, रविन्द्रनाथ
11-83 (सड़क द्वारा) टैगोर मार्ग। टैलीफोन न. 7326
और दयाल पुत्री लीला 133, धन्वन्तरी नगर, इन्दौर।
16. 10-11-83 यमुना नगर श्रीमती सन्तोष मेहत्ता, मानव
(सड़क द्वारा) आध्यात्मिक संघ 269, सरोजिनी
कालोनी, यमुना नगर।
17 11-11-83 प्रात. अमीन श्री राम कुमार उपाध्याय
(सड़क द्वारा) अमीन, जिला कुरूक्षेत्र।
18. 12-11-83 होशियारपुर वापिसी
19. 18,19,20- चण्डीगढ़ सेठ त्रिलोक चन्द ठेकेदार
11-83 (सड़क द्वारा) बंगला न. 4 सैक्टर 19A.
20. 28 29- लखनऊ (रेल द्वारा) श्री कृष्ण मोहन तिवारी
11-83 गौतम बुद्ध मार्ग
21. 30,1,2.3,4- मिश्रिक, सीतापुर, आचार्य कृष्ण मोहन
11,12-83 लखीमपुर। श्रीवास्तव मुहल्ला खाकी सराय
मिश्रिक तीर्थ
22. 5.6,12-83 कानपुर
23. 7,8-12-83 चौबेपुर, कन्नौज
24. 9-12-83 कानपुर से होशियारपुर वापिसी
25. 10-12-83 होशियारपुर पहुंच।

सूचना

हर वर्ष की भान्ति दयाल मानवता प्रचारक सभा, देहली की तरफ़ से मालिके कुल परम सन्त परम दयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज द्वारा संचालित 32 वाँ वार्षिक दशहरा "फ़कीर मानवता संत सम्मेलन" सलबान पब्लिक स्कूल ओल्ड राजेन्द्र नगर नई देहली में दिनांक 15 व 16 अक्तूबर, 1983 को आयोजित किया जा रहा है। सभी सत्संगियों को इस शुभ अवसर पर देहली पहुंच कर सत्संगों की अमृत वर्षा से लाभ उठाना चाहिए।

सूचना

मानव कल्याण सभा चंडीगढ़ की तरफ से पिछले वर्ष की तरह हज़ूर पूर्ण पुरुष पूर्ण धनी परम सन्त, परम दयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज के जन्मदिन के उपलक्ष्य में एक विशाल सत्संग आयोजित किया जा रहा है। यह सत्संग 19, 20 नवम्बर 1983 को मालिके कुल परम दयाल जी महाराज के एकमात्र उत्तराधिकारी परम सन्त हज़ूर मानव दयाल डा. ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा। इसमें भारत के बिशिष्ट अनुभवी सन्तों को सत्संग की अमृत वर्षा करने के लिये आमन्त्रित किया गया है। सत्संग का स्थल सनातन धर्म सभा सैक्टर 27/c चंडीगढ़ होगा। सत्संग का पूरा प्रोग्राम मानव मन्दिर के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

कर्म चन्द
सैक्रेटरी मानव कल्याण सभा

वन्दनम्

चरण शरण की वन्दना, नित कोइ और न काम ।
गुरु बसो चित आय मेरे, बख्श दो निज नाम ।।
तेरी शरणागत हुआ फिर, किसकी राखूं अस ।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूँ उदास ।।
रूप ध्याऊँ, नाम गाऊँ, शब्द राता मन ।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन ।।
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय ।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय ।।
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग ।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग ।।

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
23-10-83 को होगा ।

★★★

Regd. No. 2626574 OCTOBER 10th 1983
MANAV MANDIR NWHSP—7

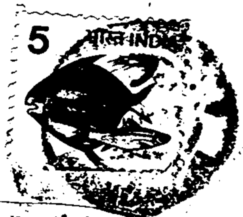

ADDRESS

To 1283 Sh. A. Hanmanth Rao
H. No. 10-3-194/8
Humayun Nagar
Hyderabad 500028 A.P.

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022

Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)